COVID-19 PANDEMIC POEMS

A COLLECTION OF MULTILINGUAL POETRY

कोविद-19 विश्वव्यापी महामारी कविता

बहुभाषी कविता संग्रह

Volume-V

खंड – 5

Editors/संपादक

Morve Roshan K. मोरवे रोशन के.

Raman Takiya रमन टाकिया

CAPE COMORIN PUBLISHER

Kanyakumari, Tamilnadu, India

www.capecomorinpublisher.com

COVID-19 PANDEMIC POEMS

A COLLECTION OF MULTILINGUAL POETRY

कोविद-19 विश्वव्यापी महामारी कविता

बहुभाषी कविता संग्रह

Volume-V

खंड – 5

Editors/संपादक
Dr. Morve Roshan K. (डॉ. मोरवे रोशन के.)
Raman Takiya (रमन टाकिया)

CAPE COMORIN PUBLISHER
Kanyakumari, Tamilnadu, India
www.capecomorinpublisher.com

Covid-19 Pandemic Poems

Volume-V

Editors

Dr Morve Roshan K.

Raman Takiya

Cape Comorin Publisher
Kanyakumari, Tamilnadu, India
TITLE: Covid-19 Pandemic Poems
Volume: V
ISBN: 978-93-88761-62-8
Editors: Dr Morve Roshan K. and Raman Takiya
Price: 125/-
Published by: Cape Comorin Publisher
Kanyakumari, Tamilnadu, India

Website: www. Capecomorinpublisher.com
©. Cape Comorin Publisher, All rights Reserved 2020.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any other information storage and retrieved without prior permission in writing from the publishers.

Concerned poets are solely responsible for their views, opinions, policies, copyright infringement, legal action, penalty or loss of any kind regarding their poems. Neither the publisher nor the editors will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their poems.

"

Dedicated to All Corona Warriors

"

आभार

हम, **डॉ. मोरवे रोशन के.** (चीन और ब्रिटेन) और **रमन टाकिया** (भारत) इस *Hindi Title:* ***कोविद- 19 विश्वव्यापी महामारी कविता: बहुभाषी कविता संग्रह*** *English title:* ***Covid-19 Pandemic Poems: A Collection of Multilingual Poetry*** के संपादक उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपना कीमती समय निकालकर इस विषय पर अपनी कविताएं भेजी हैं। इनके अलावा हम इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने वाली **डॉ. मक्तुबा (लोला) मुर्तज़खोद्जयवा** (उज़बेक) जी के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं। हमने इस कविता संग्रह को इकट्ठा, एडिटिंग, और प्रूफ़रीडिंग करने के लिए अपने पुरे ८० घंटे दिए। विशेष रूप से डॉ मोरवे रोशन के. ने सभी कवी और कवियत्रियोंसे संपर्क, ढांचा बनाना, और टाइपिंग अरेंजमेंट करने का काम किया।

मैं **डॉ. मोरवे रोशन के.** साउथवेस्ट विश्वविद्यालय (चीन) और बंगोर विश्वविद्यालय (ब्रिटेन) का आभार व्यक्त करती हूँ। आत्मीय प्रोत्साहन देने के लिए प्रोफेसर **जू वेन** (चीन) का भी आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं **रमन टाकिया** व्यक्तिगत रूप से **डॉ. मोरवे रोशन के.** का आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मुझे इस पुस्तक के सह-संपादक के योग्य समझा और साथ मिलकर संपादकीय कार्य करने का अवसर दिया। इसके अलावा **ज्योति पवार,** पी.एचडी शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय (भारत) का भी शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होने इस पुस्तक से संबंधित बारिकी सुधार कार्यों में हर समय मेरा सहयोग किया।

डॉ. मोरवे रोशन के. (कॉलेज ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज, साउथवेस्ट विश्विद्यालय, चीन और बंगोर विश्विद्यालय, ब्रिटेन)

और

रमन टाकिया (आंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, भारत)

संपादक/EDIOTRS

हिंदी

1. डॉ. मोरवे रोशन के. उनका जन्म 1990 में अक्कलकोट, महाराष्ट्र में हुआ। वे पैतृक गाँव, परांडा, जि. उस्मानाबाद में पली-बढ़ी और ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई उन्होंने वहींसे की। 2010 में MA इंग्लिश की पढ़ाई के लिए वे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय औरंगाबाद चली गयी। उसके बाद उन्होंने M.Phil और PhD संशोधन गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय (भारत) से किया। 26 नवंबर 2018 को, उन्होंने गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय (भारत) से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 2014 में इसी विश्वविद्यालय से एम.

फिल की डिग्री भी हासिल की। एम. फिल और पीएचडी के लिए उन्हें यूजीसी फेलोशिप (भारत) से सम्मानित किया गया। 2019 में फिर वे ब्रिटेन माइग्रेट हो गयी। 8 वर्षों से व्याख्याता, शिक्षक, स्वयंसेवक, कवि, संपादक, लेखक और अनुवादक के रूप में काम कर रही हैं। वे बंगोर विश्वविद्यालय (ब्रिटेन) में **'मानद रिसर्च एसोसिएट'** पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रतिष्ठित हैं। वे साउथवेस्ट विश्वविद्यालय (पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चीन) की पोस्टडॉक्टरल फेलो हैं; उन्हें दो साल चीन से फैलोशिप सम्मानित किया गया है।

उन्होंने डॉ. जान्हवी के एक प्रोजेक्ट के लिए साहित्य समीक्षा की। उनकी आखिरी नौकरी अंग्रेजी के गेस्ट फैकल्टी के रूप में चिल्ड्रन्स यूनिवर्सिटी (भारत) में एम. ए पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए हुई थी। उन्होंने तीन साल से अधिक समय तक वालंटियर एक शिक्षिका के रूप में गुजरात राज्य सरकार स्कूल (प्राथमिक विद्यालय, भारत में अंग्रेजी पढ़ाने का कार्य किया है) में काम किया। उन्हें 7 जुलाई 2017 में अतिथि व्याख्यान देने के लिए राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (भारत) से निमंत्रण मिला। वह 10 पत्रिकाओं / पत्रिकाओं में से एक वैश्विक / अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार / समीक्षा / एसोसिएट / प्रोस एडिटर बोर्ड (बांग्लादेश) की सदस्य हैं (बांग्लादेश), भारत, दक्षिण अफ्रीका, लंदन और नाइजीरिया)।

उनके कुल **114** शोध कार्य प्रकाशन: **20 शोध पत्र, 3 अध्याय, 2 लघु कथाएँ, 1 साक्षात्कार, 2 समाचार**

पत्र लेख, और 6 कविताएँ उनके नाम प्रकाशित हैं। उनकी **4** पुस्तकें (**1** सह-लेखक के रूप में, **2** सह-संपादक के रूप में और **1** एक संकलन है) भी प्रकाशित हुई हैं। वे पुस्तकों की सह-लेखिका / संपादक हैं) 2018 में लक्षी पब्लिकेशन प्रेस (भारत) द्वारा *एमिली ब्रोंटे की वेदरिंग हाइट्स* (*1847*) में आलोचना और अनुकंपा की आलोचना, 2. सह-संपादित पुस्तक *आइडेंटिटी निगोशिएशन एंड मार्जिनलिटी (2018)* में लक्षी प्रकाशन (भारत) द्वारा प्रकाशित हुई हैं। 3. ईबुक *कोविद- 19 महामारी कविता खंड 2,* केप कोमोरिन पब्लिकेशन, प्रेस, (भारत) 2020। उनकी कविता, और लघु कहानियों का दुनियाभर में अनुवाद किया गया है। अरबी, बंगला, फ्रेंच, जर्मन, गुजराती, हिंदी, इग्बो, ब्रुनेईयन मलय, मराठी, पश्तो, रूसी अन्य कई भाषाओँ में। वह वर्ल्ड पोयट्री कॉन्फ्रेंस के जूरी सदस्य के रूप में **'जूरी अवार्ड्स'** के कार्यकारी सदस्य हैं। वह एक फिलोसोफी पोएटिका **'एसोसिएट प्रोफाइल'** भी है। एक विशेष मार्गदर्शक के रूप में, उनकी एक विशेष मार्गदर्शिका ***"कोविद - 19 स्पेशल इशू"*** ने केप कोमोरिन, तमिलनाडु, भारत द्वारा प्रकाशित किया है।

प्रो. नीयी के साथ एक अतिथि विशेषांक (बिषय: "क्लाइमेट चेंज") को कैफ़े डिसैन्स पत्रिका, यूएसए में प्रकाशित किया जाएगा। वे यूनिवर्स जर्नल के विशेष ISSUE की प्रमुख हैं। वे ई-बुक वॉल्यूम पर काम कर रही है। कविता

खंड २ पर "***कोविद - 19***" (**डॉ. मोरवे रोशन के.** सह संपादक) और एक ***स्पेशल इशू*** (एक सोलो गेस्ट एडिटर) जो केप कोमोरिन प्रकाशक, भारत प्रकाशित हो गया है

सह-संपादक के रूप में, फाउंडेशन फॉर एविडेंस-बेस्ड डेवलपमेंट प्रेस (भारत) ने ***अनटोल्ड हिस्ट्री ऑफ वूमेन: डिफरेंट स्टोरीज इन द वर्ल्ड*** नामक एक पुस्तक को छपाने का स्वीकार किया है। उनकी किताबें विभिन्न विश्व के शीर्ष प्रेस प्रकाशनों में मुख्य प्रेस आउटलेट में सह-संपादक के रूप में प्रकाशित होती हैं। वह संपादक के लिए बहुत योगदान देता है, और अनुवादक, उनकी **74 बाल साहित्य पुस्तकें एम्सको प्रेस** (भारत) द्वारा प्रकाशित हुई हैं। उसने कई अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों और सम्मेलनों में सक्रिय भाग लिया है। इसके अलावा, उनके कागजात, और परियोजनाओं / पुस्तकों / शोध कार्यों में अफगानिस्तान, बांगलादेश, ब्रूनी, दारुस्सलाम, चीन, ग्रीस, सऊदी, मालद्वीप, सूडान, यूएसए, ब्रिटेन और उज्बेकिस्तान के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय शामिल हैं। वह एक अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अपने शोध के लिए जानी जाती हैं।

उन्होंने एक उपन्यास भी लिखा है और वर्तमान में, अपने उपन्यास को प्रकाशित करने के लिए प्रतिष्ठित प्रकाशक की तलाश कर रही है। **डॉ. मोरवे रोशन के.** ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों और संगोष्ठियों में 28 पत्र प्रस्तुत किए हैं। उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सरकारों के साथ-साथ अन्य संस्थानों से 9 यात्रा अनुदान प्राप्त हुए हैं। जुलाई

2017 में, उन्होंने ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (अफगानिस्तान) में आमंत्रित किया। जनवरी 2020 में, उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (बांग्लादेश) के लिए आमंत्रित किया। 6 मई 2020 को, उसने कैम्ब्रिज वेबिनार (ब्रिटेन) में भाग लिया। उसने 13 कार्यशालाओं / अनुसंधान पद्धति पाठ्यक्रम / उपचारात्मक पाठ्यक्रम में भाग लिया है। जुलाई 2017 को, उनका साक्षात्कार (बांग्लादेश का इतिहास) "द डेली इत्तेफाक" अखबार प्रेस, ढाका (बांग्लादेश) में प्रकाशित हुआ है। वह किसी भी सत्र में सहयोग / कार्यशालाओं / सम्मेलन पैनल का स्वागत करती हैं। उनके विशेषज्ञता के क्षेत्रों में अफ्रीकी साहित्य, बाद के औपनिवेशिक साहित्य, लिंग अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन, उत्तर आधुनिक, महिला अध्ययन, महत्वपूर्ण सिद्धांत, प्रवासी अध्ययन, लोककथा अध्ययन, अंग्रेजी, तुलनात्मक साहित्य और इस्लामिक अध्ययन शामिल हैं।

ईमेल: morve_roshan@rediffmail.com

ENGLISH

Dr Morve Roshan K. born in 1990, Akkalkot, Maharashtra. She brought up in a small city Paranda, Dis. Osmanabad. From there, she completed her study till Graduation. In 2010, she moved to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University for English MA.

She has been working as Lecturer, Teacher, Tutor, Volunteer, Poetess, Editor, Writer, and Translator for the past 8 years. She is international scholar, prestigious to receive an "Honorary Research Associate" award at the Bangor University (United Kingdom). She is a Postdoctoral Fellow of Southwest University (Peoples Republic of China); she has been awarded a two-year China Gov. Fellowship. On 26th November 2018, she obtained PhD degree

from the Central University of Gujarat (India). She has also received M. Phil degree from the same university in 2014. For M. Phil and PhD, she got awarded UGC Fellowships (India).

She did a literature review for a project Under Dr Jhanvi. Her last employment was to teach the MA Course at Children's University (India), as a Guest Faculty of English. She worked at the Gujarat State Government School (taught English, in primary School, India) as a teacher for more than three years. She received an invitation from the National Translation Mission (India) to deliver a Guest Lecture on 7 July 2017. She is a Member of the Global/International Advisory/Review/ Associate/Prose Editor Board (Bangladesh, of 10 journals /magazines (Bangladesh, India, South Africa, London and Nigeria). Additionally, she also worked as a Freelance Editor. She is the first coordinator of Indigenous Studies Virtual Conference which is going to held on 20-22 August 2020. She is organising various conferences and seminars with an international collaborations.

Her research work published, total 18 research papers, 3 chapters, 2 short stories, 1 interview, 2 newspaper articles, and 6 poems. Her 4 books (1 as co-author, 2 as co-editor and 1 is an anthology) are also published. She is co-author/editor of books entitled, 1) *The Criticism of Annihilation and Compassion in Emily Bronte's*

Wuthering Heights (1847) by Lakshi Publication Press (India) in 2018, 2. Co-edited book *Identity Negotiations and Marginality: The Theoretical Perspectives in the Contemporary Age* by Lakshi publication (India) in 2018 and 3. Ebook. *Covid-19 Pandemic Poems Volume II*. Cape Comorin Publication, Press, (India) in 2020. Her anthology book is *Translation Anthologies of Poems and Short Stories in World Languages* published by Notion XPress (India) Paperback, 1 Jan 2020. Her poetry, and short stories have been translated into world languages such as Arabic, Bangla, French, German, Gujarati, Hindi, Igbo, Bruneian Malay, Marathi, Pashto, and Russian languages. She is the Jury member of the World Poetry Conference as "Executive Member" for JURY Awards. She is also a PHILOSOPHIQUE POETICA "ASSOCIATE MEMBER". As a SPECIAL GUEST EDITOR, her one SPECIAL GUEST ISSUE has published by Cape Comorin, Tamil Nadu, India.

One Guest Special Issue (Theme: "Climate Change") with Prof Niyi will be publish in the Café Dissensus Magazine, USA. She is the Head of Special ISSUE of The UNIverse Journal. She is working on Ebook Vol. II on COVID-19 (She, and Dr Selvi) and a SPECIAL ISSUES (a Solo Guest Editor), which are under the publication with Cape Comorin Publisher, India.

As a co-editor, the Foundation for Evidence-Based Development Press (India) has accepted a book titled *Untold History of Women: Different Stories from the World*. Her books are published as co-editor in the main press outlets in various world's top press publications. She contributes greatly to the editor, and translator, her 74 Children's Literature books published by Emesco Press (India). She has taken an active part in many international symposiums and conferences. In addition, her papers, and projects/books/research works include reputed universities of AFGHANISTAN, BANGLADESH, BRUNEI DARUSSALAM, CHINA, GREECE, SAUDI, TURKEY, MALDIVES, SUDAN, USA, UNITED KINGDOM, and UZBEKISTAN. She is well known for her research within an international arena.

She has written a novel, and currently, looking out reputed publisher to publish her novel. Dr Morve Roshan K. has presented 28 papers in national and international conferences, seminars and symposiums. She has received 9 travel grants from national and international governments as well as other institutions. In July 2017, she has invited to the Online International Symposium (Afghanistan). In January 2020, she invited for the International Symposium (Bangladesh). On 6th May 2020, she has participated in the Cambridge Webinar (United

Kingdom). She has attended 13 Workshops/ Research Methodology Courses/ Remedial Courses. On July 2017, her interview ("The History of Bangladesh") has been published in The Daily Ittefaq Newspaper Press, Dhaka (Bangladesh). She welcomes to have collaborations/workshops/conference panel/ chair any session. Her areas of specialization include African literature, post-colonial literature, gender studies, cultural studies, postmodern, women's studies, critical theories, diaspora studies, translation studies, folklore Studies, English, comparative literature, and Islamic Studies.

Email: morve_roshan@rediffmail.com

2. रमन टाकिया

जन्म: 18 अगस्त, 1988, गाँव- हथवाला, जिला जींद (हरियाणा), भारत

पता: H/N 581 टी-हट्स रोहिणी सेक्टर-3, दिल्ली-110085.

शिक्षा: एम.ए. हिन्दी (DU), दिल्ली

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य हिन्दी (MGAHV), वर्धा, महाराष्ट्र. वर्तमान में पी.एचडी हिन्दी शोधार्थी (AUD), दिल्ली यूजीसी नेट. कुछ पत्र-पत्रिकाओं में शोध-आलेख और कविताएं प्रकाशित। ईमेल: ramantakiyadu@gmail.com

प्रस्तावना

नयी आशा

मैं थक गयी हूँ, बहुत थक गयी ...

पूछा गया: क्यों? किस से ?

मैंने उत्तर दिया: भय..., डर..., कोरोनावायरस जैसी मुसीबत से...

मेरा दिल खाली रह गया है, मेरा दिल में मनोहरता नहीं है, एक खाली सड़क की तरह…

पूछा गया: क्यों? किस वजह से?

मैंने जवाब दिया: महामारी... लॉकडाउन... कोरोना से ...

मुझे बहुत याद आती है ....

पूछा गया: क्यों? किस की?

मैंने उत्तर दिया: मेरे रिश्तेदार ... साहित्य, कविता की...

अगर कोई आदमी भूखा रहता है, तो वह खाना खाकर अपनी भूखी मिटा देता है । अगर उसका दिल खाली और कमजोर रह गया हो तो...?

हाँ, हाँ, हाँ। दिल भी कमजोर हो जाता है। कोई सन्नाटा जम जाता है।

पूछा गया: क्यों?

आखिरकार, यह एक ऐसी बला है जो सारी दुनिया को कंपकंपी उठी है, वह बला दिल का दर्द भी बन गयी है।

इस का इलाज है, यह साहित्य... यह कविता... जो अंधेरी रात के बाद सुबह की रौशनी दिखा देती है। नज़्म का एक और बच्चा पैदा होनेवाला है, जो भविष्य के लिए आशा का प्रदर्शन करता है । दिल का दरवाज़ा खोलकर नयी e-book का स्वागत कीजिये। नई चीज़ की अलग सी ख़ूशबू होती है। इस e-book की ख़ूशबू अभी अभी तन्दूर में पके हुए नान की ख़ूशबू की तरह ख़ूशगवार है। दिल का दरवाज़ा पूरी तरह खोलें ताकि यह आपके दिल में एक अतिथि बन सके, आपके खाली दिल का इलाज कर सके।

हाँ, हाँ, हाँ, खाली दिलों को भरने वाली कविताओं का यह संग्रह आपका सच्चा साथी बन सकता है। इसमें सभी कविताएँ आज के कोरोनावायरस से लड़ने की चरम हिम्मत एंव उम्मीद की नयी किरण दिखाती है। यह ऐसी आशा है जो सुबह सवेरे चमकनेवाला, हर एक घर में अपनी रौशनी डालनेवाला सूरज की तरह है। जबकि सूरज प्यार से आपके शरीर को गर्म करता है, और ये कविताएं आपके दिल को गर्म करती हैं।

संग्रह में हिंदी, मराठी, बंगाली, तमिल और अंग्रेजी की कविताएँ, एक हिंदी उद्धहरण और एक अंग्रेजी पत्र भी शामिल हैं। यह बहुभाषी संग्रह भारत के बहु-जातीय लोगों के लिए मुश्किल समय में एक आध्यात्मिक प्रोत्साहन हो सकता

है। इस संग्रह की प्रत्येक कविता एक अनूठी शैली में लिखी गई है, और प्रत्येक कवि की रचनात्मकता अद्वितीय है। लेकिन हर पंक्ति में, आशा, दया की मुहर लगी है।

हालाँकि कविताएँ अलग-अलग भाषाओं में लिखी गई, लेकिन उनका मक़्सद एक ही है:, कोरोना से लड़ने के लिए लोगों में आशा और विश्वास जगाना।

कृपया, अपने दिल को प्यार खिलाएं ... आनंद लें ...
दिली प्यार के साथ **डॉ मक्तुबा (लोला) मुर्तज़खोद्जयवा, ताश्क़न्द, उज़्बेकिस्तान**

आभार: मैं, **डॉ मक्तुबा (लोला) मुर्तज़खोद्जयवा** हृदय से **डॉ. मोरवे रोशन के.** का आभार मानती हूँ मुझे उन्होंने इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने का अवसर दिया।

डॉ मक्तुबा (लोला) मुर्तज़खोद्जयवा - इंडोलॉजिस्ट, ओरिएंटलिस्ट। उनका जन्म 1973 में ताशकंद में हुआ था। 1990 से 1995 तक उन्होंने ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ ओरिएंटल स्टडीज़ की इंडियन फिलोलॉजी के विभाग में अध्ययन किया। उन्होंने 1993-1994 तक आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान के उच्च कोर्स में भी पढ़कर डिपलोमा प्राप्त किया। अब 1995 से आज तक ताशकंद स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में हिंदी, उर्दू भाषा और भाषा शिक्षण प्रणाली के अनुसार पढ़ा रही हैं । उन्होंने कई वैज्ञानिक, कार्यप्रणाली लेख और पाठ्य पुस्तकें भी तैयार कीं। मक्तुबा (लोला) मुर्तज़खोद्जयवा ने 60 से अधिक भारतीय फिल्मों का उज्बेकी भाषा में अनुवाद किया है। वह आजकल वे भारतीय साहित्य संबंधी शोध कार्य में व्यस्त हैं।

Table of Contents

क्रम स. /Numbers	कोविद-19 विश्वव्यापी महामारी कविता	पृष्ठ स./Page No.
	आभार /Acknowledgement	
	प्रस्तावना/Introduction	
	हिंदी कविताएँ	
1	*आत्ममंथन* शैंकी जैन	1
2	*लाचार नहीं हैं हम* आरती शर्मा	5
3	*कोरोना को मिलकर हराना है* सुमित कुशवाह	9
4	*तेरे अंदर ही हिन्दुस्तान है* गौरव गुप्ता	12
5	*ओह! कोरोना* कादरी नशरीन	15
6	*जिदंगी और हौसला* नयना रस्तोगी	18
7	*मजदूर* जुगुल किशोर चौधरी	20

8	***कोरोना काल (गीत)*** जुगुल किशोर चौधरी	22
9	***कोरोना की मार*** वन्दना गोंड	25
10	***सलाम है*** अर्पण चौधरी	28
11	***हसरतें*** ज्योति विश्वाकुमार हर्ष	31
12	***उदास है मन का मौसम*** आँचल यादव	34
13	***आज खुद से सवाल करो ना*** सुरेश चन्द्र मौर्य (यश)	37
14	***कोरोना काल*** वंदना पाण्डेय	41
15	***क्या कारण था*** अंशिका भटनागर	44
16	***कोरोना*** साधना अग्निहोत्री	46
17	***संक्रमण*** प्रवीन वर्मा	49
18	***वो दूर तक जाएंगे*** प्रवीन वर्मा	51

19	***परेशान ये भी तो हैं*** ज्योति पासवान	53
20	***कोरोना को हराना है*** मोनिका	57
21	***वो भी क्या दिन थे*** मिशा परनामी	59
22	***क्या है कोरोना?*** रिया नारायण	62
23	***मॉल्थस और कोरोना*** पंखुरी सिन्हा	64
24	***वैक्सीन की खोज*** पंखुरी सिन्हा	67
25	***लॉक डाउन में भारत*** पंखुरी सिन्हा	74
26	***उद्धरण/QUOTATION*** नैना मौर्य	80
	मराठी कविता	
27	***कोरोना*** डॉ. केदार रविंद्र केंद्रेकर	83
28	***बा कोरोना, तुझे अभिनंदन!*** डॉ. रविंद्र माणिकराव केंद्रेकर	87
	বাংলা কবিতা	

29	***করোনা...*** অর্চনা সেনগুপ্ত	91
30	**Corona (Transliteration)** **Archana Sengupta**	94
31	*এ পৃথিবী আবার সবার* ডাঃ অঞ্জন সেনগুপ্ত	96
32	***কোভিড-১৯*** মৃন্ময়ী ব্যানার্জী	99
	தமிழ் கவிதைகள்	
33	*கொரோணா ஓர் சிறப்பு பார்வை* **அ.சாமுண்டிஸ்வரி**	104
34	*என் பாரத தாயே* **கார்த்திக் குமார் ல**	108
	ENGLISH POEMS	
35	***MY CITY IS REALIZING*** Karimov Rakhimdzhan Zakirovich	111
36	***CORONA: AN EPIDEMIC OR AN OPPORTUNITY?*** Shaikh Qadeer Nawab	114
37	***ERRORLESS WORLD*** Karimov Rakhimdzhan Zakirovich	117
38	***VIRULENCE HEALED***	120

	WITH TIME Meghna Roy	
39	***RECIPROCITY*** M. Ida	124
40	***SPOUSE IN THE PANDEMIC HOUSE*** CIBI T R	126
41	***LIFE JUST EXIST*** M. Ida	129
42	***HOPE*** Karimov Rakhimdzhan Zakirovich	132
43	***ME, THE CROWN CREATURE*** M. Ida	134
44	***LIVING WITH DIS-EASE*** Pahul Singh Jolly	137
45	***BEWARE*** Dr Deepa Revi	140
46	***THE DESERTED PARK AND POOL*** Dr. Jayashree Hazarika	144
47	***STELLAR CORONA*** J. M. Jerlin Jeena	147
48	***TO THE NOVEL COLONIZER*** Annie V. M.	149
49	***IGNORANCE IS BLISS*** Pankhuri Sinha	152
50	***LETTER***	156

	Md Atif Alam	

हिंदी कविताएँ

शैंकी जैन, रिसर्च स्कॉलर, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

1. आत्ममंथन

व्यापार है व्यापार है
ये मौत का व्यापार है
आरंभ है या अंत है
इस ओर है उस पर है
व्यापार है...

चीन की है गलती
षड्यंत्र है या जाल है
सवाल है, सवाल है
हर एक से सवाल है...
आमिर हो, गरीब हो
भूख पर बवाल है
बवाल है, बवाल है...

यू के, अमेरिका
स्पेन हो या इटली
गले में फस गई देखो
कैसी ये गुठली
भारत भी बेहाल है
बेहाल है, बेहाल है...

मौत की न गिनतियाँ
भर रहे सब सिशकियाँ
नर हो या नार हो
लाचार हैं, लाचार हैं...

डर को भी डर से
डर है अब लग रहा
इंसान ही इंसान को
देखकर है भग रहा
धिक्कार है, धिक्कार है...
घुट रहा हवा का दम
पानी को अब प्यास है
छुप गया है सूरज यहां
अंधेरों की सरकार है
व्यापार है, व्यापार है
ये मौत का व्यापार...

न रंग है न रूप है
न दिख रहा कोई भूत है
नाम जिसका कोरोना
मनुष्य की इसको भूख है
कर रहा नर संहार है
बदहाल हैं, बदहाल हैं

सब यहाँ बदहाल हैं...
भारत में सरपट
यह खुद को फैला रहा
न दूर ये जा रहा
सब आएँगे चपेट में
या बचेंगे कुछ यहां
सोच-सोचकर
परेशान हैं, परेशान हैं...

---शैंकी जैन, रिसर्च स्कॉलर, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

आरती शर्मा, पी. एचडी स्कॉलर, हिंदी विभाग,
त्रिपुरा विश्वविद्यालय, भारत.

2. लाचार नहीं है हम

आज भी जिंदा हैं, वो महाजन
जो लूटते थे मासूम जन को
लगाते थे ब्याज़
ज़िंदगी भर का।
छीनते थे गरीबों की रोटी
उठाते थे उनकी मासूमियत का फ़ायदा।
अब गाँव के प्रधान
अपनी जेबें भरने को
ज़िंदगी भर नेता रहने को
देश बर्बाद करने को
मजदूरों को मूर्ख बनाने को।
माँग रहे हैं भीख।
दे दो मुझे तुम रुपया
क्वारनटाईन से बच जाओगे
किसी को खबर नहीं होगी
पर अगले चुनाव में तुम
जीत मुझी को दिलाओगे।
तुमको अगर रहना है, घर अपने
तो जो कहता हूँ वही करो
नहीं तो तुम्हें और तुम्हारे परिवार को

कर दूँगा मैं क्वारनटाईन।
इतने दिन से तो रहे तुम भूखे
अब भी भूखे मरोगे।
क्योंकि तुम्हारी यही नियति है।
जाओ मरो
तुम्हारे होने या न होने से
फ़र्क किसको पड़ता है
तुम मरोगे तो और आ जाएंगे।
क्या कमी है इस देश में
तुम जैसे मूर्खों की?
कल धर्म के नाम पर तुमको मूर्ख बनाते थे,
आज भी बनाते हैं
आगे भी बनाएंगे।
तुमको शिक्षा से रखेंगे वंचित
तभी हम ज्ञानी कहलाएंगे।
आज करोना का देकर हवाला
तुमसे पद यात्रा करवाएँगे।
जब तुम पंहुचोगे अपने राज्य में
तब तुमको अंदर न बुलाएँगे।
न कोई करेंगे व्यवस्था तुम्हारे लिए
क्योंकि तुम हो लाचार
क्योंकि तुम हो लाचार...

---आरती शर्मा, पी. एचडी स्कॉलर, हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, भारत.

सुमित कुशवाह रिसर्च-कम-टीचिंग फेलो, इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी विभाग, कमला नेहरू इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, सुलतानपूर, भारत

3. कोरोना को मिलकर हराना है

घर में रहिये
किसी से भी न मिलिये
सबके साथ हमको आगे जाना है
क्यूंकि...
हम सबको कोरोना को मिलकर हराना है।
चेहरे को न हाथ लगाइये
जल्दी किसी से न हाथ मिलाइये
बाहर से घर में आने पर
अल्कोहल युक्त सैनिटाइज़र को
अच्छे से हाथ पर लगाइये
सावधानी ही समझदारी है
कोरोना बहुत बड़ी महामारी है
इसलिये...
कोरोना से हम सबको नहीं घबराना है।
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है
मानवहित और मानव-रक्षा की खातिर
हम सबको यह कदम उठाना है
क्यूंकि...
हम सबको कोरोना को मिलकर हराना है।

---सुमित कुशवाह रिसर्च-कम-टीचिंग फेलो,
इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी विभाग, कमला नेहरू
इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, सुलतानपूर, भारत

गौरव गुप्ता, NIS & काइट्स लेवल-१ सर्टिफाइड
क्रिकेट कोच, सोनीपत, हरियाणा, भारत

4. तेरे अंदर ही हिन्दुस्तान है

बन्दा ना बन्दे की जात है,
अब हो गए है ऐसे हालात है,
कोरोना को हराना है,
बस थोड़े दिन की बात है ॥

ये साहस रंग लाएगा,
फिर से तू मचाऐगा,
बस थोड़ा सब्र कर ले तू,
फिर रास्ता मिल जाऐगा ॥

यह मंज़िल ही उम्मीद है,
इसका रास्ता ही प्रीत है,
संभाल ले कुछ और पल,
खुद को रोकने मे जीत है ॥

अब जीले खुद के अंदर को,
तू खुद ही बहुत महान है,
कुछ नऐ रास्तो की खोज कर,
बेकार मे क्यों परेशान है ॥

तू हौसला बुलंद कर,
तू खुद ही खुद का बाण है,
आ कर ले खुद पे विशवास तू,
तेरे अंदर ही हिंदुस्तान है ॥

---गौरव गुप्ता, NIS & काइट्स लेवल-१ सर्टिफाइड
क्रिकेट कोच, सोनीपत, हरियाणा, भारत

कादरी नशरीन. ए. एम. फिल रिसर्च स्कॉलर, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात, भारत.

5. ओह! कोरोना

बिन बुलाये मेंहमान बनकर तुम आ गए
आते ही दुनिया पर छा गए
बिदाई की तारीख भी नहीं बताई
ओह! कोरोना तुम कहां से आ गए।
हँसती-खेलती जिंदगी विरान बना गए
झुमती-नाचती महेफिलों को सन्नाटा दिखा गए
गलियों-बाजारों को सुनसान बना गए
ओह ! कोरोना तुम कहां से आ गए...
बच्चे-बूढ़े सब घर में कैद हो गए
धनवान रंक होते चले गए
अस्पताल-श्मशान भरते चले गए
ओह! कोरोना तुम कहां से आ गए...
मर्द-औरत सबको परदा सीखा गए
मानव घर में, जानवर रास्ते पर आ गए
अनाज-जीवन की कीमत समझा गए
ओह! कोरोना तुम कहां से आ गए...
इंसानों को बीमार और प्रकृति को बचाते गए
एक-दूसरे से दूर रहकर कैसे जीना है?
यह सीखा गए
ज़्यादा नजदीकी अच्छी नहीं
यह सीखा गए

ओह ! कोरोना तुम कहां से आ गए...
इंसानियत एक बार समझा गए
महामारी में सबको सबको इंसान बना गए
अल्लाह-ईश्वर-ईसू सब याद दिला गए
ओह! कोरोना तुम कहां से आ गए...

---कादरी नशरीन. ए. एम. फिल रिसर्च स्कॉलर, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात, भारत.

नयना रस्तोगी, छात्रा- बी.एससी., वी. आर. ए. एल. राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली, भारत

6. जिदंगी और हौसला

माना हर कदम पर एक नयी कहानी है
तो जिदंगी की किताब में जिदांदिली एक निशानी है
ऐसी ही एक कहानी आज एक महामारी ने गढ़ी है
देखो जिदंगी से मौत आज कितनी बड़ी है।
हर तरफ मायूसी, जिदंगी वीरान
कोरोना के कहर से हर शख्स परेशान
इस कोरोना से जंग आसान नहीं
मालूम है हमें
इन उलझनों से हम हार नहीं मानेंगे
चाहे आते रहें जिदंगी में तमाम उतार-चढ़ाव के मजंर
आखिर यही तो हमारे तजुर्बों की एक निशानी होगी
मुश्किल भरे इस दौर में, हौसलों की जंग जारी है
हर कदम पर कोरोना योद्धाओं का संघर्ष और पहरेदारी है
हमारी तमाम हसरतें परवान चढ़ेगी एक रोज
हर मुश्किल से टकराने की दिल में ठानी है
रब की इनायत और सबकी कोशिशें जारी रहे
तो यकीनन कोरोना से यह जंग हम जीत जाएंगे।

---नयना रस्तोगी, छात्रा- बी.एससी., वी. आर. ए. एल.
राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली, भारत

जुगुल किशोर चौधरी, शोध अध्येता , हिन्दी विभाग, डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

7. मजदूर

तुम्हारा मर जाना
या मारे जाना
किसी को विचलित
या चिंतित नहीं करता,
नहीं करता किसी भी
धर्म को आहत!
न ही प्रभावित होती है कोई राजनीतिक सत्ता!
कोई भी तो नहीं है तुम्हारा शुभ चिंतक
या सामाजिक कार्यकर्ता
कुछ भी तो नहीं हैं तुम्हारे
मानवाधिकार
शायद! शायद!
तुम इंसानों में कभी
गिने ही नहीं गए।

---जुगुल किशोर चौधरी, शोध अध्येता, हिन्दी विभाग,
डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

जुगुल किशोर चौधरी, शोध अध्येता , हिन्दी विभाग, डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

8. कोरोना काल (गीत)

भारत के सरदर्द बनल और ज्यू के जंजाल
ग़ज़ब भइल बेदर्द शिरोमणि लाल कोरोना काल

सब अंगणन के साथ आई विदेशन से
पिछड़न के पैदल लै डूबा यही मलाल
शिरोमणि लाल कोरोना काल
ज्यू के जंजाल, मरौ है लाल।

भूख प्यास से मरत पड़े सब आँसू रहे छलकाय
जियौ बहादुर सत्ताधारी, फूलमाल-, तालीथाली बजाय-
शिरोमणि लाल कोरोना काल
ज्यू के जंजाल, मरौ है लाल।

डॉ और सिपहियन के अब सुनौ सबन तुम हाल
दलित गरीब सबन के भइया बेमतलब रह ठोक बजाय
शिरोमणि लाल कोरोना काल
ज्यू के जंजाल, मरौ है लाल।

मिलत न रोटी-पानी बिछौना कौनव स्कूलन मा
कोरेनटाइन बदहाल भइल सब गंउअन मा
शिरोमणि लाल कोरोना काल

ज्यू के जंजाल, मरौ है लाल।

मरत पड़े हैं कइक दिनन से होत न कछु इलाज
भइल स्क्रीनिंग हर रोज, भइल न असली जाँच
शिरोमणि लाल कोरोना काल
ज्यू के जंजाल, मरौ है लाल।

NOTE: यह गीत हिंदी अवधि और बघेली मिश्रित है।

---जुगुल किशोर चौधरी, शोध अध्येता, हिन्दी विभाग,
डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

वन्दना गोंड, रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, भारत

9. कोरोना की मार

ये कैसा खौफ मानव में
कहीं बेटा कहीं बेटी
कहीं है मानवता रूठी
कहीं मौत बनकर
कोरोना नाश यूं करता
कुछ अपने घरों में बैठे
सबसे नजर फेरे
मुसाफिर डर गए देखो
कहर कैसा ये आया
कहीं डरते माता-पिता
डरती बहने और पत्नियां
जिन्हें गम है अपनो को को खोने का
लेकिन, लगे हैं वो जमाने को बचाने में
कोरोना ऐसा मंजर है,
मौतों का एक समंदर है
नहीं बचा कोई
इसकी चपेट में आए
हिंदू-मुस्लिम-सिख और ईसाई
इसने बर्ता जाति धर्म-का भेद नहीं
सहमें आज सब जन

कोई इनमें श्रेष्ठ नहीं।

---वन्दना गोंड, रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, भारत

अर्पण चौधरी

10. सलाम है

सलाम है हर एक कोरोना योद्धा को
जिसने अपनी परवाह न करते हुए लोगों को
बचाया
सलाम है उस डॉक्टर को
जिसने अपनो से ज्यादा देश की जनता की फिक्र की
सलाम है उस पुलिस को
जिसने अपनी जान से ज्यादा
दूसरों की जान को अपनी जान माना
सलाम है उस हॉस्पिटल स्टाफ़
को जो दिन-रात मरीज़ों को संभाल
रहे हैं।
सलाम है उन वीरों को
जो ऐसे समय में भी देश के नागरिकों को
हर तरह का जरुरी सामान पहुंचा रहे हैं।
सलाम है मेरे देश के किसान को
जो इन विपरीत परिस्थितियों में भी
देश को अन्न पहुंचा रहे हैं।
सलाम है उस सरकारी कर्मचारी को
जिसने देश हित के लिए अपनी नींद-चैन-आराम
तक त्याग दिया।

सलाम है उन सब डेरी, सब्ज़ी,
किराने की दुकान और मेडिकल वालों को
और इनके अलावा उन सभी लोगों को
जिन्होने देश को किसी चीज की कमी नहीं होने दी।
सलाम है मेरे देशवासियों को
जिन्होने इन विषम हालातों में
घरों में रहकर संयम से काम लिया।

---अर्पण चौधरी

ज्योति विश्वाकुमार हर्ष

11. हसरतें

बेइंतहा ख़्वाब, कितनी ही चाहतें हैं
इस दिल पर दस्तक देती, कितनी ही ख़्वाहिशें हैं।
हर रोज़ चल देते हैं कदम
एक अंजानी तलाश में
यह सोच कर कि
इन तमन्नाओं की मंज़िल कहीं तो है।

घर पर बेचैनी की धुंध और बाहर इक भीड़ से घुटन
शायद खो गए हैं हम कहीं इन रास्तों पर
रातें जब सवाल लाती हैं
तो हम खुद से कह देते हैं
अरे! सब हैं इस दौड़ का हिस्सा, उन बीच मेरा दौड़ना भी सही है।

आज इस सफ़र में यह कैसा मोड़ आया
ये कैसी मुसीबत आई, जिसने हमको हराया
रोक लगा दी सब पर यूँ
जैसे किसी ने फिरसे लक्ष्मण रेखा खींच दी हो
देखो ना इस रेखा के उस पार

कुछ सपने अब भी वहीं रूके हैं।

है कुछ वक़्त मिला तो खुद को गले लगाओ
काम कुछ कम हुए तो घर पर वक़्त बिताओ
बख़ूबी ऊपर वाले ने समझाया
और सोचन पर विवश किया
वह क्या है जो हम ढूँढ रहे हैं?
वह क्या है जिसकी हमारे भीतर कमी है?

नई सुबह फिर आएगी
राहें हमे फिर बुलाएँगी
हम फिरसे साथ चलेंगे
लेकर मुस्कुराहटें, कुछ हसीन सपने,
मुट्ठी भर ज़मीन और सुकून का आसमान।

---**ज्योति विश्वाकुमार हर्ष**

आँचल यादव, पी.एचडी शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय

12. उदास है मन का मौसम

रास्ते वीरान हो गए
सड़कें गुमनामी में खो गयी
सभी नटखट, नादान, शैतान बच्चे चुप कर दिए गए
उनकी चहलकदमी उजाड़खाने में कैद होकर खत्म हो चली
बड़े बूढ़े भी डरे-डरे से नज़र आते हैं
नयी नवेली दुल्हन भी बात-बात पर झल्ला जाती हैं
क्या कहूँ आज सभी से
उदास है मन का मौसम

पेड़- पौधे, खेत-खलिहान खुश नज़र आते हैं
हर तरफ हरियाली, सुकून दे जाते हैं
नदियाँ फिर से मुस्कराने लगी है
पंछी फिर से चहचहचहाने लगे हैं
तुमसे मनोबल और साहस लेकर फिर से चल पड़ेगें हमदम
लड़े है, लड़ेगे उदास मौसम के खिलाफ
बगावत की है, करेगें साथियों
बस क्या कहूँ आज सभी से
उदास है मन का मौसम

---आँचल यादव, पी.एचडी शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय

सुरेश चन्द्र मौर्य (यश)
शोध छात्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, भारत

13. आज खुद से सवाल करो ना

आज खुद से सवाल करो ना
अपने-अपने राम को याद करो ना
मैं से खुद मिला
चौदह दिनों के कोरोनटाइन में
सुना था अकेले आए थे अकेले जाओगे
महसूस किया आइसोलेसन वार्ड में
कहां हम बहक गए थे हिन्दू-मुसलमान में
अहम में थे हम, स्वयं को भूलकर
मृगतृष्णा-सा बंजर रेगिस्तान में कहीं भटका
मनुष्य खुद को भूलकर
खुद को मार रहा है
जीवन की परिभाषा भूलकर
पत्थर तरास रहा है
मानवता मानव से करो ना
फिर किस बात का रोना
आज खुद से सवाल करो ना
अपने-अपने राम को याद करो ना
हे विश्व बंधु बिपत्ति आयी है !विश्व में, बनकर कोरोना
आओ लौट चले अपने घरों में
समय का चक्र, धम्म चक्र, सूदर्शन
कोई नहीं समय है, सिर्फ स्वदर्शन

आत्मनिरक्षन, आत्मपरिक्षण, स्व को जगाना
अप्प दीपो भव, भव से पार लगाना
फिर किस बात कारोना -
आज फिर से सवाल करोना,
अपने–अपने राम को याद करोना |
हे कर्मवीरभूख से लड़कर !,
खुद को पाल सकते हो तुम,
शहर से गाव की ओर,
पलायन कर सकते हो तुम,
अंजनी सा बलवान हो तुम,
समुद्र सा धैर्यवान हो तुम,
हजारो मील पग से माप सकते हो तुम
हुक्मरानो को भी माफ कर सकते हो तुम |
चलते देखा पगडंडियो पर, रेल की पटरियो पर
बरबस ही याद आ गए सुदामा |
मित्रो, मित्रो सुना था गलियो मे, रैलियो मे
कहा गुम हो गए तुम कान्हा |
ऐसी मीत की प्रीति न देखी
पहुच न सके अपने धामा,
खुली पटरियों पर थके हारे,
सोये की सोये रह गए कितने सुदामा |
आज खुद से सवाल करोना,
अपने अपने राम को याद करोना -|

हे जीवनदाताकिस जन्म का है ये नाता !,
मनुष्य हो तो मनुष्य का काम करोना,
मिले तो इन्हे झुककर प्रणाम करोना,
सीख फर्ज की, हरण दर्द की,
स्नेह, प्यार की कोमलता,
पगपग पर-, छितिज से तल पर,
कर्म भाव ही महकता,
प्राण न्युछावर किए कर्मभूमि पर,
आसमान से पुष्प, चरण रज मे है बरसता |
यश की तरह गुणगान कर सकते नहीं
तो पत्थरो से भी ना वार करोना
आज खुद से सवाल करोना,
अपने –अपने राम को याद करोना |

---सुरेश चन्द्र मौर्य (यश)
शोध छात्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, भारत

वंदना पाण्डेय, रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, भारत

14. कोरोना काल

सब यहां परेशान हैं
उनकी चीखें रोज गूंजती हैं मेरे कानों में
उनकी सिसकियां मुझे सोने नहीं देती
रातों में अक्सर उठ खड़ी होती हूं
जब मुझे दिखाई देते हैं वह मासूम चेहरे
जो भूख से लटके हुए थे
और किसी खाते हुए इंसान को देखकर
उसे ललसाई भरी आंखों से देख रहे थे
उस आदमी को खाना खाते हुए
और चलते हुए मुंह को देखकर
उस मासूम का मुँह भी चल रहा था
मानो वह अपनी भूख को यह समझा रहा था
कि तेरी इसी में तृप्ति है
बस इतना ही तुझे मिल सकता है
इन हालातों में मैंने किसी इंसान को
खाना खाते हुए देख तो लिया
किसी को खाना तक देखना नसीब नहीं हुआ
ऐसे ही ना जाने कब तक उस मासूम ने
अपनी भूख को समझाया
यह कैसा कोरोना काल आया...

---वंदना पाण्डेय, रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, भारत

अंशिका भटनागर, एम जेपी रोहिलखंड विद्यापीठ,
बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

15. क्या कारण था

क्या कारण था! कोरोना की जंग का क्या कारण था?
कोरोना को हथियार बना, क्या चीन ने अदृश्य विश्वयुद्ध का आगाज़ किया?
त्रहिमाम! त्रहिमाम! विश्व में त्रहिमाम का क्या कारण था?
भारत एक ओर कोरोना से लड़ा! लड़ा देशद्रोहियों से!
लड़ा जातिवाद से! लड़ा तब्लीगी जमात से!
जो देश की राजधानी है!
उस दिल्ली से पैदल चल पड़े,
दो रोटी को मोहताज हुए उन मजदूरों की मौत के क्या कारण थे?
निर्दोष संतो की हत्या का क्या कारण था?
कोरोना की इस बड़ी जंग में देशद्रोह का क्या कारण था?
क्या कारण था?
जहां लोकडाउन में कैद हर इन्सान है!
वहाँ बढ़ते मरीजों का क्या कारण था?
देश जीतेगा कोरोना से! जीतेगा हर एक जंग से!
फिर मुस्कुरायेगा इण्डिया!!

---अंशिका भटनागर, एम जेपी रोहिलखंड विद्यापीठ, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

साधना अग्निहोत्री, पी एच.डी शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

16. कोरोना

कोरोना तुमने करोड़ों को रुलाया है
उजाड़ दिए अनेकों घर
तुमने दिखाई मुझे
रेलवे ट्रैक पर पड़ी लावारिस सूखी रोटियां,
सूखे प्याजऔर लावारिस बिखरी लाशें
तुमने दिखाया मुझे
हजारों मजबूर मजदूरों को
जो हजारों मील पैदल चले
उनके पैरों के छालों से रसने वाले खून को भी देखा मैंने
तुमने सुनाई
बच्चे, बूढ़े और युवाओं की बेबस चीख़ें और सिसकियां
जो अब रोज गूंजती हैं
मेरे जहन में
मैंने देखा वो लोकडाउन के सारे नियम तोड़
सड़कों पर भूखा मरता रहा
रोज प्यासा हजारों मील खुद घिसड़ कर चलता रहा
ट्रॉली बैग में पूरे परिवार को लाद कर
और
मैंने ये सब देखा, बस यूँ ही देखा
जी हाँ कोरोना ने मुझे यह सब दिखाया

पर मैं कुछ ना कर सकी
मैं कोरेनटाइन थी
मैं सेल्फ आइसोलेशन में हूँ
और मैं खुले रहने वाले इस लॉकडाउन में हूँ।

---साधना अग्निहोत्री, पी एच.डी शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रवीन वर्मा, पीएच.डी. हिन्दी शोधार्थी, अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

17. संक्रमण

डर लगता है अब मुझे तुमसे मिलने से
चाह बहुत है तुमसे मिलने की
चाह को दफ़न कर लेता हूँ दिल के सन्दूक में
तुमसे मिलने के लिए पूर्व में जो युद्ध करता था
अब वह भी नहीं कर सकता हूँ, लेकिन
हाँ बच जरूर सकता हूँ इस संक्रमण से
अब बचना ही युद्ध करने जैसा है
कब तक यूँ बचता रहूँगा?
साल-दर-साल प्रादुर्भाव हो जाता है संक्रमण का
पहले मैं रोजगार और अस्तित्व के लिए लड़ता था
अब जिंदगी के लिए लड़ रहा हूँ
शायद लड़ना ही मेरी नियति है
लड़कर जीतना मेरा प्रण|

---प्रवीन वर्मा, पीएच.डी. हिन्दी शोधार्थी, अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रवीन वर्मा, पीएच.डी. हिन्दी शोधार्थी, अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

18. वो दूर तक जाएंगे

वो दूर तक जाएंगे
अपनी व्यथा किसको सुनाएंगे?
सब देखकर भी
धृतराष्ट्र बन जाएंगे
वो दूर तक जाएंगे
अपने नंगे बदन को
चमड़ी से छुपाएंगे
और आंसुओं को
पानी समझकर पी जाएंगे
वो दूर तक जाएंगे
पेट को
पीट से लगाएंगे
दोनों कंधों पर
बच्चों को बिठाएंगे
वो दूर तक जाएंगे।

---प्रवीन वर्मा, पीएच.डी. हिन्दी शोधार्थी, अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

ज्योति पासवान, पीएचडी शोधार्थी,
काजी नज़रुल विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

19. परेशान ये भी तो हैं

मैं आश्चर्य हूँ, हमारे मस्तिष्क का बिम्ब
उन वैश्याओं तक क्यों नहीं पहुँच पाया?
मजदूर, सफाईकर्मी, नर्स, डॉक्टर
को तो हमने माला पहना दी
घरेलू नारी, कामकाजी स्त्री का महत्व दिखा दिया
पंद्रह वर्षीय बालिका के साहस से भी देश को अवगत कराया
परंतु वह भी तो एक नारी है, और
साथ ही अपने बच्चों की अकेली अभिभावक भी।
महामारी के काल में
हमे वह कहीं दिखाई नहीं देती है
न ही सरकारी सहायता में
न ही मीडिया की सुर्खियों में
न अखबार के पन्नों में
न ही वेबिनार में
एक सवाल सबसे
हमने उनके अस्तित्व पर विचार क्यों नहीं किया?
जो केवल अपनी कुण्ठा मिटाने जाते हैं
किंतु अपना ही एक अंश छोड़ आते हैं उनके पास
उनके ही बच्चों की ही भूख मिटाने के लिए
वह वैश्या माँ उनसे ही सहायता नहीं ले सकती
क्योंकि समाज के पारिवारिक व्यक्ति हैं, उनके बाप।

मीडिया ने यह तो देख देख लिया
झुग्गियों में कितने घरों में चूल्हा नहीं जला
किन्तु, वैश्याओं के घरों में तुम्हरा कैमरा क्यों नहीं गया?
आँकड़ा तो लगा लिया तुमने कि
कितने वर्ष लगेंगे
देश की अर्थव्यवस्था को संभलने में
क्या इनकी बदहाली का कोई आँकड़ा है
तुम्हारे अर्थव्यवस्था की फाइल में?
अनिवार्य है, दो फीट की दूरी रखनी होगी
विडम्बना देखो उसकी, रोजी-रोटी के लिए उन्हें
तुम्हारे तन से दूरी मिटानी होगी
आशा भी नहीं है कि
तुम दुबारा जाओ उनके पास
कोरोना की शर्त है
एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य का ना हो मिलन
जबकि उनके व्यापार की तो आवश्यकता ही है
देह से देह का मिलन
कौन देखता है इनकी तरफ
कौन देखेगा इनकी तरफ
जबकि जानते सभी हैं
बदहाल ये भी हैं
परेशान ये भी हैं...

---ज्योति पासवान, पीएचडी शोधार्थी, काजी नज़रुल विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

मोनिका, Q.No.22/5 इंडिस्ट्रियल
कॉलोनी सी.बी. गंज बरेली

20. कोरोना को हराना है

हर देश इस वक्त है परेशान
पल-पल जा रही है निर्दोषों कि जान
अमेरिका इटली या हो स्पेन
एक वायरस ने कर दिया सबको बैचेन
डॉक्टर कहते घर में रहो
पुलिस कहती घ्र में रहो
तभी बचेगी सबकी जान
कोरोना ने ऐसा आतंक मचाया
हमारे देश पर भी संकट आया
हमे मिलकर है इसे हराना
फिर एक बार देश को पहले जैसा बनाना
सरकार का साथ हर कदम पर निभाबा
घरों में रहकर डॉक्टर-पुलिस को कुछ राहत पहुंचाना
फिर खुलेंगे स्कूल, कॉलेज और सभी संस्थान
है विश्वास इस कोरोना हराएंगे
फिर हम पहले जैसे मुस्कुराएंगे।

---मोनिका, Q.No.22/5 इंडिस्ट्रियल कॉलोनी सी.बी. गंज बरेली

मिशा परनामी, रिसर्च स्कॉलर, अंग्रेजी विभाग,
कलिना केम्पस, मुंबई यूनिवर्सिटी

21. वो भी क्या दिन थे

जिनसे हर दिन बात किए बिना नहीं रहा जाता
वो दोस्त एक बार छूट जाए
तो उन बातों का मोल बहुत कम रह जाएगा
मिल जाते हैं जब ऐसे लोग किसी अनजान रस्ते में तो
हम ठीक हैं सब ठीक हैं बोल कर आगे बढ़ जाया करते हैं
आज फिर इस लॉकडाउन ने एक मौका दिया है
ऐसे दोस्तों से दोबारा गुफ्तुगू करने का
पर क्या अब ये हो पायेगा?
क्या वो दोस्त जिन्हें हम पीछे छोड़ आये हैं
दोबारा हमसे गुफ्तुगू करना चाहेंगे?
आज जब इंस्टाग्राम पर दोस्तों की प्रोफाइल्स देखीं
तो उनमे से बहुत लोगों की शादियां हो चुकी थी
जो पहले कहते थे ब्राइड्समेड बेस्टमैन बनेंगे
वो वादे आज सारे झूठे पड़ गए
क्या फिर दोबारा वो रिश्ते जुड़ पाएंगे?
अगर नहीं भी जुड़े तो एक अफ़सोस नहीं रहेगा मन में
कि हम ने कोशिश नहीं की
कोशिश तो करी
पर वो समय कुछ और था और आज समय कुछ और है।

--- मिशा परनामी, रिसर्च स्कॉलर, अंग्रेजी विभाग,
कलिना केम्पस, मुंबई यूनिवर्सिटी

रिया नारायण, रांची

22. क्या है कोरोना?

क्या किसी ने हैं सोचा
क्या है ये करोना?
शायद इस वायरस से हम सबका भला है होना
करके हमें हमारे घर पर ही लोकडाउन
निकला है यह देश-विदेश की यात्रा पर
हैं इसकी नज़र हर गली हर नुक्कड़ हर किसी के सफ़र पर
दिया है इसने समय घरवालों के बिताने का
भूले वादे-भूली कस्मों को निभाने का
पर ये भी मत भूलो साथियों
हैं कुछ लोग जो बाहर लड़ रहे हैं ये जगं
सलाम करो उन डॉक्टर और पुलिस वालों
को जो बाहर होकर भी हमारे संग हैं
जान-बुझकर उन्होने मुश्किल में डाली है अपनी जान
रहे सलामत हम सब
सर झुकाकर देते हैं उन्हें सलाम
हैं हम सभी सच्चे नागरिक देंगे उनका साथ हर डगर पर
लड़ाई है इस वायरस से
हम सबको लड़ना है इससे
अपने-अपने घरों में रहकर
ज़िंदगी बितानी हैं हमें हँसकर नहीं है हमें रोना
जीतेंगे हम सभी हारेगा ये कोरोना।

---रिया नारायण, रांची

पंखुरी सिन्हा, मुजफ्फरपुर, भारत

23. मॉल्थस और कोरोना

किस विडम्बना का हुआ था
पर्दाफाश
शुरू होते ही कोरोना काल
कितनी बड़ी आबादी कर रही है
जीवन यापन केवल
भवन बना कर
और कितनी बड़ी
भवन बनवा कर!

पता नहीं कितनों ने
भुला दिया है
मॉल्थस का वह सिद्धांत कि
प्रकृति करती है हिसाब
तमाम कांस्पीरेसी थेओरीज़ के बीच
ग़ौर करें इस सच पर
कि कितने प्रतिशत हरियाली के साथ
बिठा रहे हैं तादात्म्य
लगातार बनाते हुए कंक्रीट
के नए नए जंगल!

आप कह सकते हैं
यह समय सिद्धांतों का नहीं
शायद एक वैक्सीन ढूंढने का है
जिसमें जुटा है अमेरिका समेत
समूचा विकसित समाज

किन्तु यदि हम कहते हैं
खुद को विकासशील
प्रगति शील
तो क्या एक बार फिर
सिद्धांतों पर विचारने की
ज़िम्मेदारी
नहीं बनती हमारी?

---पंखुरी सिन्हा, मुजफ्फरपुर, भारत

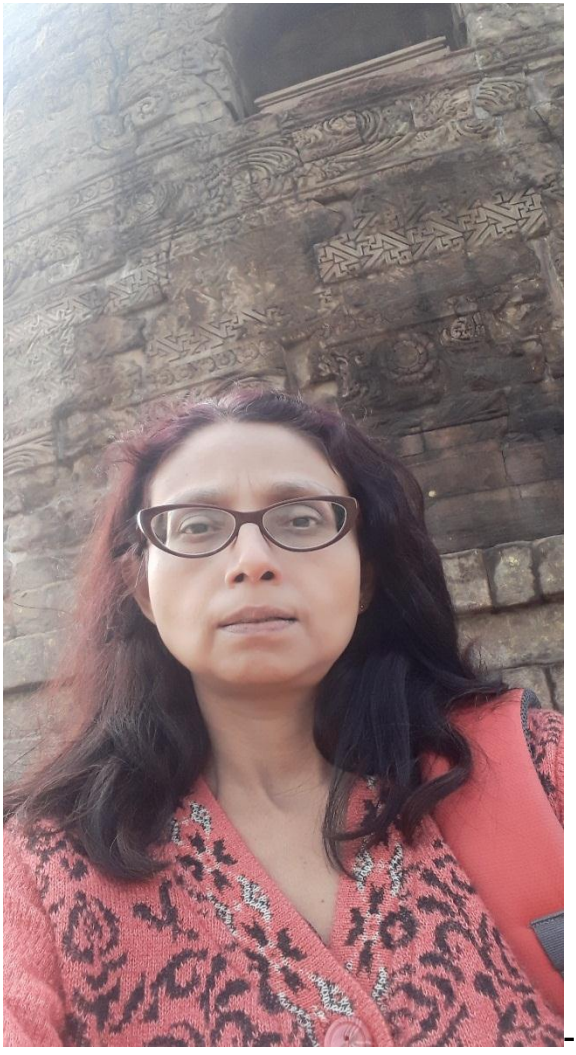

पंखुरी सिन्हा, मुजफ्फरपुर, भारत

24. वैक्सीन की खोज

वैज्ञानिक ढूंढ रहे हैं
गुफाओं में वह
कोविड नाइनटीन
जिससे शुरू हुआ था
संक्रमण

वो ढूंढ रहे हैं यूनान से लेकर
केन्या की गुफाओं में
मिला नहीं है अब तक
कोविड उन्नीस का वह
प्रकार, जिसके
माइक्रो ऑर्गैनिस्म से
बनाई जा सके
कोरोना वायरस की रोक थाम की वैक्सीन

जानते हैं हम सब
कि प्रयोग शालाओं में
होता है जिन जानवरों पर प्रयोग
उन्हें बनाया जाता है अक्सर
बेहद बीमार
यदि नहीं भी बेहद तो कुछ तो ज़रूर

ये कविता चीन को अकेला
और अलग करने की नहीं है कोशिश
संवाद का है प्रयास
कि वैज्ञानिक समुदाय के
कहने पर बार बार
कि हुआ नहीं है
लैब से कुछ भी लीक
जनता के मन में
उबल रहा है
खदक रहा है
सवाल कि आखिर क्या
ढूंढ रहे थे
कोविड उन्नीस संक्रमित
चमगादड़ में
वुहान के उस लैब में वैज्ञानिक?

क्या वे ढूँढ रहे थे
कोविड के ही किसी और प्रकार
का इलाज?
कैसा इलाज?
आखिर, कुछ बोलते क्यों नहीं
वे अमेरिकी वैज्ञानिक

जो निरंतर आ और जा रहे थे
वुहान की इस लैब में
कहते हुए कि खतरनाक हैं
बेहद असुरक्षित
तमाम परीक्षण की स्थितियां
कि ख़तरे क्या थे
और क्या हुआ है?

सोचिये दोस्तों, आखिर अपने तईं
कितना बीमार हो सकता है
एक अदद खाता पीता
फारिग होता
गुफा में लटका चमगादड़
या कि कुछ किया गया
उसके साथ मांस के बाज़ार में?

अब तो डिसमिस कर दी गयी है
चमगादड़ खाने की थ्योरी भी
फिर बचता क्या है
सिवाय गहराती मिस्ट्री के
क्यों हर बार चीन कहता रहा है
वह लगाएगा हर किसी के
शोध पर नियंत्रण?

नाराज़ न हों मेरे अनगिन चीनी मित्र
मैं बहुत प्रशंशक हूँ
आप के देश की
जिस अनुशासन के साथ
आपने किया लॉक डाउन
उसकी भी

किन्तु, एक दिन पहले
पिट्सबर्ग अमेरिका में हुए क़त्ल ने
पैदा कर दी है एक विचित्र स्थिति

क्या यह केवल संयोग हो सकता है
कि एक दूसरे झगड़े ने ले ली
इस कोविड रीसर्चेर की जान?

यदि ऐसा है तो
हिरासत में क्यों लिया गया
हार्वर्ड का वह प्रोफेसर
जिसके बताये जा रहे
वुहान से इतने तालुकात?

और क्या पता चला है

उसकी हिरासत में आगे?
यदि मानना है ट्रम्प का
कि पर्ल हार्बर जैसा है
कोविड उन्नीस का आक्रमण
तो वैज्ञानिक क्यों नहीं होते
एकजुट
दुनिया भर को
बताने के लिए
कि आखिर हो क्या रहा था
वुहान में?

मुमकिन है प्राकृतिक हो
इस हद तक संक्रमित कर
इंसानी फेफड़े को एकदम
अक्षम कर
मार डालने वाला यह वाइरस
बिना जेनेटिक मॉडिफिकेशन
फिर भी क्यों लगता है
किसी हॉरर अथवा साई फाई फिल्म से
आयातित किसी स्क्रिप्ट का हिस्सा?
असंभव और अविश्वसनीय?

और आखिर इसी वुहान लैब को लेकर

क्यों हैं इन थ्रिलर्स में
ऐसे खतरनाक प्रेडिक्शन्स?

कुछ लोगों ने उठाया है सवाल
बायोलॉजिकल वेपन्स को लेकर
मोदी ने इसमें मिलाया है टेरर द्वारा
फैलाव का एंगेल भी
यदि सच न भी हों
ये तमाम इल्ज़ामात
तो वुहान लैब का सच
ज़रूर जानना चाहेंगे
वो सारे लोग जो
महीनों से बंद हैं
अपने घरों में?

---पंखुरी सिन्हा, मुजफ्फरपुर, भारत

पंखुरी सिन्हा, मुजफ्फरपुर, भारत

25. लॉक डाउन में भारत

वे प्रवासी मज़दूर औरतें
पुरुष, बच्चे
परिवारों के जत्थे
जो बाध्य हुए तोड़ने को
कोरोना लॉक डाउन
दिखा गए विकास यात्रा का
असल चेहरा
भ्रष्टाचार को आईना

वे सुर्ख़ियों के साथ साथ
बन गए खुद के लिए खतरा भी
खतरनाक औरों के लिए
कोरोना संक्रमण के वाहक

इसलिए नकार नहीं
कि प्रधान मंत्री को
करनी चाहिए थी
पूर्व सूचना के साथ
लॉक डाउन की घोषणा
जाने आखिर कितनी
पूर्व सूचना के साथ

कि लाखों लोग पहुँच जाते घर!

लेकिन रेल और बस की बंदी से पहले
करनी ही चाहिए थी
सूचना की घोषणा
पर्याप्त नहीं तो कुछ तो
सूचना की घोषणा

किन्तु जब निकल आयी जनता
राजधानी और तमाम मेट्रोज़ की
हाईवे पर नेशनल
अगले दिन लॉक डाउन के

मांग कर माफ़ी
इस अप्रत्याशित खबर की
महफ़ूज़ छिप गये प्रधान मंत्री
रेस कोर्स आवास में

और दूरियां मापी
छोटे बच्चों ने पैदल
दुध मुँहों को उठाये
माओं ने पैदल
पैदल, दिहाड़ी मज़दूरों की

लम्बी कतारों ने
कि बिना दिन की मजूरी के
खाएंगे क्या?

अंतहीन थी सड़क
लील गयी कुछ को
और जिनको नहीं
उनके पाँवों के छाले
उगते रहे
नज़रबंद ज़मीरों के ऊपर
कुछ हथेलियों
कुछ कागज़ों पर
स्क्रीन पर टेलीविजन के

आशा है कि संसद में
पहुंचेंगे ये छाले
और मांगेगे मुआवज़ा

लेकिन दोस्तों
मैं निश्चित रूप से
इस कविता का सुखांत चाहती हूँ

इसतरह कि तोड़कर

कविता के सारे खांचे
नज़र अंदाज़ कर
व्याकरण के नियम
सुखांत चाहती हूँ
इस कविता का

क्योंकि कविता कोई कहानी
तो होती नहीं
कि अंत हो जिसका
लेकिन फिर भी
मैं सुखांत चाहती हूँ

सबके लिए जिनका जीवन
कविता है या नहीं है
पहली बार
बहुत ज़रूरी है
सुखान्त

कि यह महामारी
एक मानवीय त्रासदी की
शक्ल न ले
इसलिए वे जो अब भी
राह में हैं

उठा लिए जाएँ
सरकारी वाहनों द्वारा आरामदेह
पहुचाये जाए
अपने गंतव्यों तक
और करें गुज़ारा
उपलब्ध क्वारंटीन सेंटरों में
निगरानी करें लीडर
कलक्टर
कि गुज़र जाए
सकुशल
हम सब का ये परीक्षा काल!

------ पंखुरी सिन्हा

नैना मौर्य. विद्यार्थीपदवीधर (बीकॉम. II),

व्ही.आर.ए.एल. शासकीयकन्यापदवी,

महाविद्यालय, बरेली (यू.पी.), भारत

26. उद्धरण/*QUOTATION*

"CORONA KO HARANA HAI,

IS VIRUS KO DOOR BHAGANA HAI."

---नैना मौर्य. विद्यार्थीपदवीधर (बीकॉम. II),
व्ही.आर.ए.एल. शासकीयकन्यापदवी, महाविद्यालय,
बरेली (यू.पी.), भारत

मराठी कविता

डॉ. केदार रविंद्र केंद्रेकर, परभणी, महाराष्ट्र.

27. कोरोना

कोणास ठाऊक, '' कोरोना '' जगभरात नेमका कसा आला ?
संपूर्ण मानवजातीची झोप उडवून प्रस्थापितही झाला!
।। धृ।।

खाजगीकरण-उदारीकरण-जागतिकीकरणाच्या खोल गर्तेत, पार गुरफटलो होतो आम्ही,
वैष्विक खेडयात, आम्हाला कशाचीच नव्हती कमी !
।। 1।।

"Global warming is Global warning!" या वचनाकडे साफ दुर्लक्ष केले,
महिन्याभरातच, भोवतालचे जग होत्याचे नव्हते झाले !
।। 2।।

शेती आणि कारखानदारी या खरे तर एकाच म्यानातील दोन तलवारी,
पण शेती झाली बोथट अन् कारखानदारी झाली दुधारी ।। 3।।

कारखानदारीत वारेमाप उत्पादन आणि रोजगाराची दिसली हमी,

पर्यावरणाची '' वाट '' लागल्यामुळे शेतीत मात्र जिथे
तिथे कमीच कमी ।। 4।।

दक्षिणेत दुश्काळ तर उत्तरेत महापूर,
भारताच्या अर्थव्यवस्थेला कधी सापडलाच नाही
'' सूर '' ।। 5।।

कर्जमाफिच्या विळख्यात, शेतकरी गुरफटत गेला,
नोकरीच्या कमीत आणि आरक्षणाच्या हमीत तरूण
वहावत गेला ।। 6।।

पर्यावरणाचा नाश करून माणसाने मुक्या पशु पक्षांना
खूप छळले,
त्यांच्या शरीरातील विशाणूंना स्वतःकडे ओढवून
घेतले।। 7।।

आता सारेच कसे ठप्प ठप्प आहे झाले,
माणूस घरात बंदिस्त, प्राणी रस्त्यावर आले ! ।। 8।।

समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री सारेच सध्या '' चिंतन ''
करीत आहेत,
कोरोनानंतरच्या '' संभाव्य '' जगाचे चित्र रंगवत
आहेत ।। 9।।

हरवत चाललेल्या माणूसकीला कोरोनाने वठणीवर
आणले,
जय विज्ञान - तंत्रज्ञान म्हणणाÚयांच्या डोळयांत
झणझणीत अंजन टाकले ।। 10।।

पुन्हा येतील का ते षेतीला सोन्याचे दिवस ?
"बापुजी '' म्हणाले होते ना सर्वांना ''गावाकडे चला
परत!'' ।। 11।।

युरोप, अमेरिकेच्या अंधानुकरणातून थांबवावा लागेल
आपल्याला आपला विकास,
विज्ञानाच्या अति आहारी जाऊन ज्याने केले आपले
पर्यावरण भकास ।। 12।।

गावे स्वयंपूर्ण करून, शहरांवरचा ताण कमी
करावाच लागेल,
पर्यावरणाचे रक्षण करून लोकसंख्या नियंत्रणाचा
कार्यक्रम हाती घ्यावाच लागेल ।। 13।।

चला आपण सारे कोरोनाविरूध्द खंबीर लढा देऊ,
भविष्यतील सुजलाम् सुफलाम् भारतमातेचे नवे स्वप्न
रंगवू ।। 14।।

---डॉ. केदार रविंद्र केंद्रेकर, परभणी, महाराष्ट्र.

डॉ. रविंद्र माणिकराव केंद्रेकर, व्यवसाय – वैद्यकीय, एम.बी.बी.एस. सामान्य सराव परभणी, महाराष्ट्र।.

28. बा कोरोना, तुझे अभिनंदन!

बा कोरोना तुझे अभिनंदन ! ।। धृ।।

अनादि कालापासुन होत असलेले भूमातेचे शोषण,
क्षणात तू थांबविलेस,
बेमुर्वतखोर मानवाला महिनाभर तरी तू घरी
बसवलेस,
बा कोरोना, तुझे अभिनंदन ! ।। 1।।

वाहनांची घरघर, तू बंद केलीस क्षणात,
कार्बन डेटिंग शून्य करून, शूध्द हवा भरली
हृदयात,
बा कोरोना, तुझे अभिनंदन ! ।। 2।।

टुरिस्टांची गजबज केलीस बंद, तू व्हेनिस नामे
जलनगरात,
लगबग सुरू झाली जलचरांची पुन्हा नितळ
जलसंभारात,
बा कोरोना, तुझे अभिनंदन ! ।। 3।।

बंद करीसी तू धडधडाट कडकडाट शांत करीषी
नखषिखांत,
मन सुखावले अंतर्यामी हस्य करी बुध्द मनात,
बा कोरोना, तुझे अभिनंदन ! ।। 4।।

बंद झाली घरघर विमानांची, झाले निरभ्र आकाश,
झाले आनंदि पक्षी, त्यांना मिळाला अवकाश,
बा कोरोना, तुझे अभिनंदन ! ।। 5।।

बंद केला तो हव्यास, आणि आस ती
छद्मविकासाची,
बाध्य केले स्वपरखाया, कसे होऊ मी उपरती
निसर्गाप्रती
बा कोरोना, तुझे अभिनंदन ! ।। 6।।

---डॉ. रविंद्र माणिकराव केंद्रेकर, व्यवसाय – वैद्यकीय, एम.बी.बी.एस. सामान्य सराव परभणी, महाराष्ट्र।.

বাংলা কবিতা

অর্চনা সেনগুপ্ত, দিল্লি, ভারত.

29. করোনা...

করোনা করোনা করে এসে গেল ভাইরাস,
করোনা করোনা এখন হয়ে গেল হাই ক্লাস,
জীবনযাত্রায় এখন বাঁধা দিল করোনা,
করোনা করোনা করে কিছুই হলো না।

হাঁচি-কাশি বাদ দিয়ে হাত ধোয়া বারবার,
হলে পরে জ্বর আর শ্বাসকষ্ট,
ডাক্তারের কাছে গেলে বলে দেবে স্পষ্ট॥

করোনা করোনা করে ভয় পেয়ে থেকো না,
চলে যাবে করো না ওকে আর ডেকো না,
লকডাউন থেকে সবাই থাকো সুস্থ,
ডাক্তার কবিরাজ কে করে দাও মুক্ত।

লকডাউন থেকে করোনা কে জপনা,
চলে যাবে করোনা ওকে আর ডেকোনা,

ডিসটেন্স মেইনটেইন করো মুখে পরো মাস্ক,
আসবে না করোনা হয়ে যাবে পাস ॥

---**অর্চনা সেনগুপ্ত, দিল্লী, ভারত**

Archana Sengupta, Delhi, India

30. CORONA

(Transliteration of Bangla)

Corona Corona kore eshe gelo virus,
Corona Corona ekhun hoye gelo high class,
Jibon jaatra-e ekhun baadha dilo corona,
Corona Corona kore kichui holo na.

Haachi kaashi baad diye,
Haath dhuyo baar baar,
Hole pore jor aar saanskosto,
Doctor-er kaache gele bole debe sposhto.

Corona corona kore bhoye pe thekona,
Chole jaabe corona oke aar dekona,
Lockdown ne theke shobai thako sushto,
Doctor kobiraaj ke kore daao mukto.

Lockdown ne theke corona ke jopona,
Chole jaabe corona oke aar dekona,
Distance maintain karo mukhe poro mask,
Aasbena Corona hoye jaabe pass.

---**Archana Sengupta, Delhi, India.**

ডাঃ অঞ্জন সেনগুপ্ত, সহযোগী অধ্যাপক,
চাকদহ কলেজ, পশ্চিমবঙ্গ।

31. এ পৃথিবী আবার সবার

কুড়ি কুড়ি সালটা এলো, শুরুটা বেশ নিটোল ছিল।
নিটোল ছিল প্রকৃতিটাও, যেমন খুশি যেদিকে যাও।
যেদিকে যাও ইচ্ছে ডাণা, কোথাও যেতে নেইকো মানা।
নেইকো মানা অফিস জেতে, কিংবা ধানের সবুজ ক্ষেতে।
সবুজ ক্ষেতের গঙ্গাফড়িং, তুর্কি নাচন নাচছে তিড়িং।
নাচছে তিড়িং বাচ্চা বূড়ো, অষ্টাদশী গোড়কী খূড়ো।
গোড়কী খূড়ো নাচন শেষে, হেঁচকি তুলে বলল কেশে।
বলল কেশে একটু হেসে, বাড়িতে সব থাকবে ঠেসে।
থাকবে ঠেসে সাবধানেতে, বর্গী এলো উহাণ থেকে।
উহাণ থেকে দেশ বিদেশে, বর্গী এলো ছদ্মবেশে।
ছদ্মবেশের আড়াল থেকে, শুঁরের ঝাপট দিচ্ছে হেঁকে।
দিচ্ছে হেঁকে এধার ওধার, মানুষগুলো হচ্ছে সাবাড়।
হচ্ছে সাবাড় স্পর্ধা বরাই, হাসছে দোয়েল ছোট্ট চড়াই।
ছোট্ট চড়াই দোয়েল ডাহুক, ছিলিশ কোথায় নাচিস যে খুব।
নাচিস যে খুব আনন্দেতে, মানুষ তোরা হাড়হাভাতে।
হাড়হাভাতে মানুষগুলো, জগৎটাকে মাখাস ধুলো।

মাখাস ধুলো করিস দূষণ, বন্ধ হবে তোদের শোষণ।
তোদের শোষণ থামবে এবার, এ পৃথিবী আবার সবার।

---লেখক পরিচিতিঃ **ডঃ অঞ্জন সেনগুপ্ত** চাকদহ কলেজ, পশ্চিমবঙ্গে সহযোগী অধ্যাপক পদে কর্মরত। তাঁর বহু গবেষণাপত্র দেশী ও বিদেশী জার্নালে প্রকাশিত হয়েছে। অধ্যাপনার পাশাপাশি ডঃ সেনগুপ্ত নিয়মিত ছড়া ও কবিতা লেখেন যেগুলি বহু পত্র পত্রিকায় প্রকাশিত হয়েছে।

Baidyanath Banerjee, Camelia, Pally Shree, Malancha Road, Kharagpur, Dist: Paschim Medinipur.

32. কোভিড-১৯

শুনতে কি পাচ্ছ ওগো আকাশ বাতাস,আসমুদ্র হিমাচল,
ধরিত্রী মায়ের কান্না-------
বিশ্ব আজ করোনা জ্বরে আক্রান্ত
প্রাণভিক্ষা করার সময়টুকুও তুমি দিলেনা
তোমার সন্তানদের।
কেড়ে নিয়েছ সারা বিশ্বের
কত লক্ষ লক্ষ সন্তানদের প্রাণ
তবু তুমি নিশ্চুপ নিরাকার হয়ে থাকবে?
দেখে যাবে এই রক্তাক্ত পৃথিবীকে?
বিজ্ঞানের উন্নতি আজ সর্ব্বোচ্চ শিখরে
তবু এই প্রতিচ্ছবি কেন?
কেউ হারাল তার বাবা মাকে,কেউবা তার ছেলে মেয়েদের,
কোথাও স্বামী হারা স্ত্রীর কান্না,
আকাশে বাতাসে ধ্বনিত হচ্ছে।
নগরীর রাজপথে মৃত্যু যেন চিহ্ন রেখে গেছে
একটি মৃতদেহের ওপর অপরের মৃতদেহ
পৃথিবী আজ আতঙ্কে হিমশিতল

হয়তো আরো কোনো মরণের কাছে।

করোনা মানুষকে করেছে মানুষের থেকে দূরে
সমাজকে করেছে বিচ্ছিন্ন।
কত অসহায় গরীবের পেটে নেই আজ খাদ্য,
মহামারী ঠেকাতে সারা বিশ্বে লক ডাউন।
সামনে রয়েছে অনন্ত ক্ষুধার রাজ্য
মনে কত আশা কত স্বপ্ন নিয়ে ফিরছিল ঘরে
পরিযায়ী শ্রমিকেরা
অচিরেই রেলের লাইনে নি:শেষ হয়ে গেল
তারা
এই পরিণাম ভাবা যায়?

রোগীদের সুস্থ করার জন্য
চিকিৎসক, সেবিকাদের দিবারাত্র অক্লান্ত পরিশ্রম
তাদের জীবনের মূল্য কোথায়?
কখনো মিলেছে মানুষের অপমান, আর
অবহেলা।
এই অসহআয়তা কেন?
করোনা থেকে মুক্ত হতে হলে
নিজেদের সচেতন হতে হবে।

অসীম সাহস আর আশা নিয়ে
লড়াই চালিয়ে যেতে হবে।
বিজ্ঞানীদের অমানুষিক পরিশ্রমের
ফসল একদিন ফলবেই।
সাফল্য নিশ্চয়ই আসবে
পৃথিবী শান্ত হবে।
মানুষে মানুষে করমর্দ্দন করবে
একে অপরের সাথে আলিঙ্গনে আবদ্ধ হবে
প্রিয়জনদের জন্য অশ্রুসিক্ত সজল চক্ষু,
ভারাক্রান্ত মন সেইদিন হবে শান্ত।
জয় আমাদের হবেই।
পুলিশ, চিকিৎসক আর সেবিকাদের মুখ
আনন্দে উজ্জ্বল হবে
সবাই সমস্বরে বলবে
জয় আমাদেরই।
আমরা পেরেছি, আমরাই পারি।

---মৃন্ময়ী ব্যানার্জী।

தமிழ் கவிதைகள்

அ.சாமுண்டிஸ்வரி
உதவி பேராசிரியர்
SNS தொழில்நுட்ப கல்லாரி
கோயம்புத்தூர்.

33. கொரோணா ஓர் சிறப்பு பார்வை

மார்ச் மாதத்திற்கு முன் சீன தேசத்து
செய்தியாய் நீ.
0உனை பற்றி சிந்திக்க நேரமின்றி
சுழலுண்று கொண்டிருந்த மாணுட
இயந்திரங்கள்
தற்காலிகமாக நிறுத்தி வைக்கப்பட்டண
-எதிர்பாராத உன் ஊடுருவலால்
ட்ரண்டிங் # போல் - உனக்கெதிரான
விழிப்புணர்வால்
வைரஸே(நீயும்)வைரலாகினாய்
ஆயுதமின்றி போராட்டம்
கையுறையும் மாஸ்க்கு மட்டுமே
சாதணமாய்
தெய்வங்கள் எல்லாம்
சிறைவைக்கப்பட்டன-அதனதன்
இடத்தில்
உனை வெல்லும் போராளியாய்
பணியாற்றும்

மருத்துவர்களும்,செவிலியர்களும்,தூய்
மை பணியாளரும்,காவலரும்
குடும்பம் மறந்து கடமையாற்ற
ஒருபோதும் தயங்கியதில்லை.
ஒன்றினைந்த எங்கள் படை
நிச்சயம் வெல்லும் -
சமூக இடைவெளி என்னும் யுத்த
ரீதியில்.
வைரஸே நீ தோற்றுவித்த
மாற்றங்களில்
மனிதம் மட்டுமே ஓங்கி நிற்கிறது.
தேடலில் கிடைக்கும்
தொலைந்த பொருள் போல
மீட்டெடுக்கப்படுகின்றன -பாரம்பரிய
விளையாட்டுகளும்,கதைகளும்
அலைபேசியின் ஆதிக்கம்
சற்றே அதிகம் என்றாலும்
முகம் பார்த்து பேசும் -இக் கட்டாய
சூழலில் நாம்
அழகியதொரு தருணம் குடும்பம்
குடும்பமாய்
இனி யாருக்கும் கிடைத்திடா!

வீதியெங்கும் ஆரவாரம்
விலக்கி பார்கிறேன்!சன்னலின்
திரையை
கூட்டம் கூட்டமாய்
கடந்து செல்லும்
மான்களும்,மந்தைகளும்
சிறுத்தை புலியினங்களும்
காற்றில் கரையும்
இசையில்- பாடித் திரியும் பறவைகளும்
பார்த்திடாத மனிதன் (விலங்கு)-நான்!
கேட்டுக்கொள் கொரோணா-உன்னால்
பாதித்த உயிர்களும்
மடிந்த மக்களும் போதும்
நிறுத்திக்கொள் இதோடு
இனி ஒரு மரணம்
நிகழப்போவதில்லை-
காத்திருப்போம் சமூக
இடைவெளியோடு
கைகுலுக்கலை தவிர்ப்போம்.....

---அ.சாமுண்டிஸ்வரி
உதவி பேராசிரியர்
SNS தொழில்நுட்ப கல்லாரி
கோயம்புத்தூர்.

கார்த்திக் குமார் ல, பொறியியல் மாணவர், கோவை.

34. என் பாரத தாயே

சூரியனின் செங்கதிர் கிரணங்கள்
காரிருளில் மங்கியதே!
ஆனந்த கழிப்பாடும் வதனங்கள்
பூவாய் வாடியதே!
பறந்து விரிந்து ஓடும் நதிகள்
கண்ணிரில் மூழ்கியதே!
எண்திசை எட்டும் மங்களகீதம்
ஓலமாய் மாறியதே!
அறச்சாலை வளர்த்த நாட்டில்
சிறைச்சாலை பொங்கியதே!
இவைவிழியில் மறைந்து அசுரன் செய்த
சதியே!
என் பாரத தாயே!
இந்நிலை கடந்த நன்னிலை எங்குள்ளது?

---கார்த்திக் குமார் ல, பொறியியல் மாணவர், கோவை.

ENGLISH POEMS

Karimov Rakhimdzhan Zakirovich (Rahim Karim), Republic Kyrgyz.

35. *MY CITY IS REALIZING*

My hometown is animated,
It is as if born again,
Time gives birth to people day after day,
Familiar women and men.

I have long since missed the asphalt,
Tired of waiting for their native sidewalks,
As if the Universe is reborn,
As if life begins for the first time on Earth.

My city comes alive again,
Warmed by the bright spring sun!
People stomp: take the first steps,
Like a little child trying to walk.
There are only medical masks on their faces,
Only the eyes recognize each other,
And in every look hope sparkles,
Greet each other from afar.

I believe that day is not far off,
When all this is forgotten forever,
The coronavirus will disappear from the face of the Earth,
And everyone will be happy as before.

Fear, a pandemic, will go down in history,
Like a third world war,
A tragic war with an invisible enemy,
Killed about three hundred thousand people around the world.

---Karimov Rakhimdzhan Zakirovich (Rahim Karim), Republic Kyrgyz.

Shaikh Qadeer Nawab, Assistant Prof (CHB), Dayanad College of Commerce, Latur, India

36. CORONA: AN EPIDEMIC OR AN OPPORTUNITY?

Everyone was feeling pain in their heart,
each country was thinking that they are smart.
Corona entered and changed rules of the world.
Now, life is looking long and time looks short.
Some of us are feeling worried,
while some of us are feeling cool!
Because corona changed our routine,
and it changed our rule.
It offered us lot of time to rethink our existence,
to save world nature or to face resistance.
to think of our family, to replicate dying relations,
to get peace of mind, and to develop patience.
to laugh over little jokes and to cry over emotions,

to eat homemade food and to relieve tensions.
Corona may vanish someday.
It will leave your door.
And you will follow same routine,
that you followed before.
We may lose ourselves once again,
in hope to regain the world,
to play our given roles,
to develop our nations,
to destroy motherly nature,
and to become robotic humans.
Promise self to overcome from this panic situation,
but not to destroy nature.
Promise self to learn from past,
but not to destroy future.
Promise self to go for job,
but not to hurt relations.
Promise self to become robots,
but not to forget that we are humans.

---Shaikh Qadeer Nawab, Assistant Prof (CHB), Dayanad College of Commerce, Latur, India

Karimov Rakhimdzhan Zakirovich (Rahim Karim), Republic Kyrgyz.

37. ERRORLESS WORLD

The world, having not yet recovered from
the coronavirus,
Continues to arm.
Making plans, not having time to remove
medical masks.
Such, alas, is human nature.

I don't understand: why save each other
today,
From a deadly disease.
If tomorrow we are ready to kill each
other again,
Oh, an incorrigible World.

You are like a difficult child, unjust,
Which does not obey the parents.
You rage, rowdy, ruffian,
How tired I am of myself, oh, Universe.

You long for war,
And after years you cry from your
wounds.

How stupid and incorrigible you are, oh world,
Half a century makes me sick of your insanity ...

I hoped you would change after the pandemic,
You will become peaceful, humane.
It seems to me that my dream is a mirage,
God be with you, the incorrigible World.

---Karimov Rakhimdzhan Zakirovich (Rahim Karim), Republic Kyrgyz.

Meghna Roy, Assistant Professor of English at Bankura Zilla Saradamani Mahila Mahavidyapith.

38. VIRULENCE HEALED WITH TIME

It all came unannounced:

A huge wave of febrile anxiety,

Sabotaged our moments of drowsy langour,

The room closed in upon us,

Like a prison engulfing the convicts.

The walls tightened their grip,

Around us until we ceased to live.

Having reduced us to powerless victims,

Time wore the crown of monstrosity.

A deluge of uninvited estrangements,

Silenced the liveliness and stir of streets.

The vanished splendour of banquet halls,

Derided the evanescence of human jubilations.

The arid countenances of vapid men,

Left unassuaged with void and uncertainty.

And amidst all, dumbfounded we stood,

As barren and insubstantial as walking wastelands.

Caught in the vicissitudes of bleak time,

Choked by the perplexities of endless trials.

We were impatient as seeds sputtering in oil,

We mustered courage and gathered strength.

Rose again from the depths of doom and downfall,

Learnt to acknowledge death as a reality inexorable.

Bidding adieu to the days of blissful ignorance,

Embracing the uneasiness of phobic endurance.

We all grew up with a new collective consciousness.

---Meghna Roy, Assistant Professor of English at Bankura Zilla Saradamani Mahila Mahavidyapith.

M. Ida, Assistant Professor, Dept. of English RMK College of Engineering and Technology Puduvoyal, Thiruvallur District, Tamilnadu, India.

39. RECIPROCITY

Pollution to Plastics to Pandemic,
Pandemonium, the product.
Social distancing, the mission.
Fret and fume amidst,
Social consciousness blossomed – and
Mission fervently practised.
Gasp I, at the social animal -
That conveniently not recall
The Creator's call -
"Govern and multiply."
Distancing from earth and,
Aiming for stars – he hatched micros,
Only to shed his superlative pride.
Macros to micros, now,
The nature 'govern and mutilate.'
Is not the Architect, authentic?

---M. Ida, Assistant Professor, Dept. of English RMK College of Engineering and Technology Puduvoyal, Thiruvallur District, Tamilnadu, India.

CIBI T R, II B. A. English, Kongu College of Arts and Science, Karur, India.

40. SPOUSE IN THE PANDEMIC HOUSE

“Everything was fine,
Until we get quarantined
In the quadrilateral nest,
Where we quest as filthy guest.
And where were we doom,
As a couple for the couple
Of months and even more!
Pink slip for routine life,
But learnt to cook hot water.
And to handle the knife,
As well the incredible wife!”
An Uncle shared me this stuff,
Over his damn hot I-phone.
Giggling me wondering thee.
Then sharp vision rays of the expired bride,
Prickle the throat,
Of her expired groom.
And may also slaps him with the broom,
For that single word satire!
As so he laments!

When I giggle, he gives up
His lamentations to hang up
The call by saying,
“Is the toughest,
Job to tackle the spouse
In the house!
Especially in this,
Already pathetic pandemic period”.

---CIBI T R, II B. A. English, Kongu College of Arts and Science, Karur, India.

M. Ida, Assistant Professor, Dept. of English Rmk College of Engineering and Technology Puduvoyal, Thiruvallur District, Tamilnadu, India.

41. *LIFE JUST EXIST*

‘Stride not, do shut in,
Explore not, just observe,
A stroke, embrace tell not love.
Adverse, but,
Divide and stand,
If united, ye fall.
Discern roots and fat,
Lest gullet may gasp.
Respire check or,
Rest in peace.
Guilt of dirt be and,
Wash hands habitually,
As if ye, the McMacbeth,
Akin to Epicurean, ye be.
Bulletins, broadcasts breaking ever -
preludes elegy, by now.’
As cautions cascade, beliefs brim.
LIFE JUST EXIST.

---M. Ida, Assistant Professor, Dept. of English RMK College of Engineering and Technology Puduvoyal,

Thiruvallur District, Tamilnadu, India.

Karimov Rakhimdzhan Zakirovich (Rahim Karim), Republic Kyrgyz.

42. HOPE

A wick burns in my heart, whose name is Hope,
A candle is burning in my heart called Hope.
In my heart there is a light bulb called Hope,
A fire burns in my heart that bears the name Hope.
The sun shines in my heart, the so-called Hope,
Love burns in my heart, which strives for Life.
Vera burns in my heart that she believes in a brighter future,
A fire called Hope will not go out in my heart.
Faith in God Almighty burns in my heart,
Faith in the future of Humanity burns in my heart.

---Karimov Rakhimdzhan Zakirovich (Rahim Karim), Republic Kyrgyz.

M. Ida, Assistant Professor, Dept. of English RMK College of Engineering and Technology Puduvoyal, Thiruvallur, District, Tamilnadu, India.

43. ME, THE CROWN CREATURE

I woke up one morning,
And found myself infamous –
A 'Crown' conquered my crown,
Toothless I stand.
He invaded unceremoniously –
Hidden and uninvited,
No armaments, no military hardware -
Plagued actively, yet.
He choked my gullet,
Made me gasp and,
Fell down a score,
Beside me.
The sickly I, secluded.
My kingdom vulnerable -
Immuned for battle,
As life saviours healed me.
Ambitions ashed,
Aspirations assaulted though,
Hope isn't locked down.
Sprung forth poise,
Fierce to finish Captor.

As me, the Master Creature.

---M. Ida, Assistant Professor, Dept. of English RMK College of Engineering and Technology Puduvoyal, Thiruvallur District, Tamilnadu, India.

Pahul Singh Jolly. Student. Commerce Department, Panjab University, India.

44. LIVING WITH DIS-EASE

Fashioned like that Morningstar, wielded by the Hand,
It masqueraded as a blanket,
Over the cold denizens of this land,
It was cleped Corona,
Known around the globe yet not renowned,
And not nearly celebrated.

Sickening were it's components,
Such power and a sprinkle too much of dread,
If one ever got acquainted more often then not,
it had such a grip ,Could make the heart stop,
Untill it was feared less and loathed more,
T'was shunned ,all doors closed so it couldn't darken the thresholds any more.

With all the chaos outside and being locked in,

A journey began to the soul, to deep within,
And so being able to witness something known yet unknown,
Untill the question arose,
Was it living with disease or living with dis-ease ?

And what of this Earth ?Does it not feel or is it not miserable ?
Or is it recuperating from that degeneration caused by it's dwellers?
All these questions may or may not unravel,
But the Mind incessantly Hums,
All Pain will Go, with all days to come.

---Pahul Singh Jolly. Student. Commerce Department, Panjab University, India.

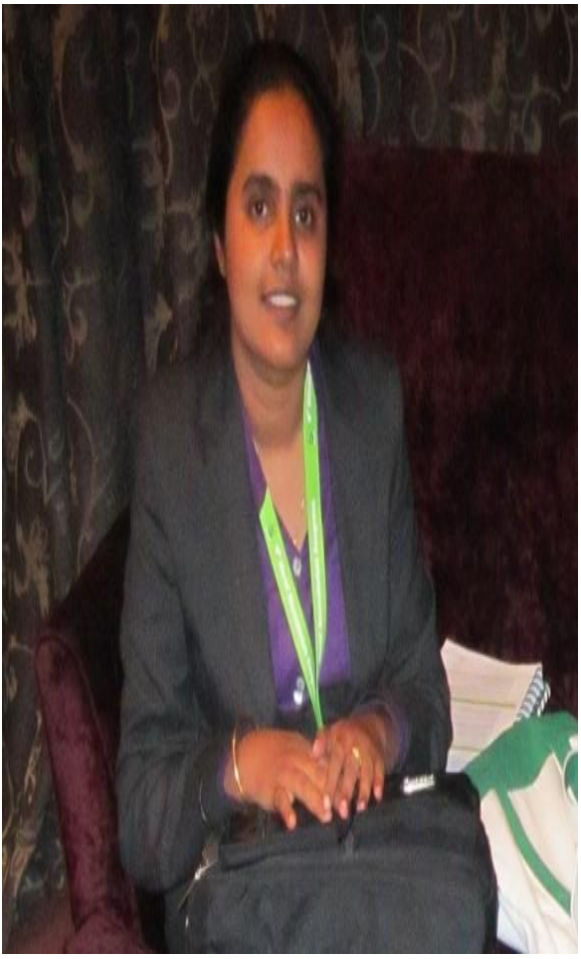

Dr Deepa Revi, MSc, PhD, Assistant Professor, Department of Pathology, Lisie College of Allied Health Sciences, Kochi, Kerala.

45. BEWARE

Civet, camels, porcupines and hedgehogs,
Cramped in cage and posed inside pods,
Peacocks, bats, snakes, fox and dogs,
Pepper sprinkled, coated in sauce,
wedged on rods,
Sways in pain, eyes brimming in tears,
Soul screaming in terror, trembling with
throbbing fears,
Tied up helpless, bleeding and broken,
Taunted for delicacies flamed, grilled and
shaken,
For gluttony, frocks, fancies and frills,
Façade of silks, leather and trills,
Selfish portly pouch of disgusting greed,
Salty chilly smeared, burnt thriving
breed,
Creatures, unable to shriek, feebly alive,
barely breathing,
Cold, cruel, powerful bloke cooks and
trades, relishing.

Tumbled trees, fallen down, dearth,

Transpiring to save the breath of trodden earth,
Springs and rivers flowing through terrain veins,
Sacred now scarce, obstructed and polluted, in vain,
Woods, beautiful with blooming flowers and lush green,
Wilted, grey, destroyed, now without shade and screen.

Scorched dried land with concrete towers,
Sprawling malls, cinema, busy roads and haulers,
Disturbing the inner peace and balance of nature,
Deploying to build a dazzling robotic future,
No wildlife no vegetation no countryside,
No hugs, no kiss, no love, new rules to abide,
Repeated warning, global warming and pandemics,

Reasons unbothered, Lessons still
unlearnt, blind human mechanics,
Seeds we sow, so we reap,
Sins unleashed, environment to seep,
Beware of mysteries, maintain safe
distance,
Befall human tragedy, every
disrespecting instance.

---Dr Deepa Revi, MSc, PhD, Assistant Professor, Department of Pathology, Lisie College of Allied Health Sciences, Kochi, Kerala.

Dr. Jayashree Hazarika, Assistant Professor, Noida.

46. THE DESERTED PARK AND POOL

This time last year,
It was never this deserted.
The park and pool,
Was the life of the people cool.

I remember the time,
When I learned swimming.
For the first time,
It was last year the same time.

With the temperatures soaring,
It was difficult to keep the kid.
Inside the house snoring,
The park was the place of choice.

But that was a year bygone,
What remains are the parks deserted.
The kid left imprisoned inside,
And Corona roaming freely outside.

---Dr. Jayashree Hazarika, Assistant Professor, Noida.

J. M. Jerlin Jeena, M.A. in English Literature, Manonmaniam Sundaranar University.

47. STELLAR CORONA

To my dear, fellow beings
STELLAR CORONA is marching over our nation.
Without any Discrimination,
Of caste, creed, religion, prosperous and destitude.
Lockdown, Quarantine everywhere,
We Keep eyes open over broadcast.
Armor of patrolman,
Anxiety of Physician, Porter - beneath the wild blue yonder,
Empty-handed immigrants.
Where man inhales oxygen of panic,
No to house of God. No to halls of ivy,
No to nine-to-five. No to traffic,
No to five-and-dime. No to theatre,
No to weekend trips. No to jet.
Larger, the outbreak of COVID-19,
Nostrils and mouth shrouded with mask.
Pinky fingers with gloves,
Pockets with sanitizer.
Still no change in safety of Life.

Stellar corona, the natural defender
snatches our economy.
And opened unemployment rate,
Coalition of government to reboot the
catastrophe.
Surprisingly, it helps for the changes in
economic structure.
Now, the world is puzzled of corona,
If you want to solve it, then enroute your
hands towards God,
To catch a glimpse of – The Flourished
Land.

---J. M. Jerlin Jeena, M.A. in English Literature, Manonmaniam Sundaranar University.

48. TO THE NOVEL COLONIZER

You are an invisible warrior,
fetching virus ever seen,
you gushed like an,
ichor from fresh wound,
you constricted our actions,
plucked our jobs.
desiccated our throats,
and turned us to ashes.
Now, the air which turned spotless,
is afresh with cries?
cries of isolation,
cries of joblessness,
cries of hopelessness.
I am not to blame you,
for thou, art innocent,
you asked us to stay home,
bonds turned covalent,
you refreshed our spirituality,
and underlined the fact,
cleanliness is next to Godliness,
But, to the evil hands,
that manipulated you,

will I ask?
What have you gained so far?

---Annie V. M., M.Phil Scholar English at Scott Christian College, Nagercoil, Kanyakumari. Tamil Nadu.

Pankhuri Sinha, Muzaffarpur, India

49. IGNORANCE IS BLISS

Might not sound
Like a real corona poem
Scattered thoughts
Might even be wrong
But will take the risk
My dear friends
Ever heard the good old saying
Ignorance is bliss?
Well, may be its not
But knowledge is no power
Either, right now
So stay put
Isolate and Quarantine
Well, almost Quarantine
If your throat is scratchy
And itchy
If head is aching
Try curing with Lemon tea
Ginger and garlic
Raw and spicy
Well, coming from a
Country, fighting
An electoral battle

Over the purchase
Of testing kits
Even the return of faulty ones
Doesn't mean
I will tell you
To not get tested
My dear friends
But please
Do not scramble for it
You too
My own country folks
For it has no cure
Stay home
Stay safe
It made it to
CNN Headlines
That having corona
Doesn't give any immunity
So, don't step out
Try the herbs
Even turmeric, In milk
N' if things get bad
Boris Johnson
Has set an example
Only there is no plasma treatment

In small towns like mine
In almost rural India
Only video therapy
So, let's talk poetry
My dear friends!
And save ourselves!

---Pankhuri Sinha, Muzaffarpur, India

---Md Atif Alam, Ph.D. Scholar, Center for Studies in Economics and Planning, School of Social Sciences, Central University of Gujarat, Gandhinagar, Gujarat, India.

50. *LETTER*

Date- 22/04/2020
Subject: Addressing to Humanity

Dear Human,

I am trying to address this letter to the whole of humanity, because humanity is in danger. However, we born in this earth free from any label or tag. Moreover, the moment we get a label the difficulty starts from their onwards. It is very hard to get rid of this label, which is assigned by the society.

As we all aware that whole planet splitting on the ground of religion, caste, creed, gender, and ethnicity. There are many more minute things, which are not visible. Although, this is the basis to dehumanize people. It also compels them not to enjoy equal rights on this planet. Because of this so-called label

assigned by the society individuality of any person suffers a lot.

So, my major concern is why it is so much necessary to define an individual with their caste, creed, religion, ethnicity and so forth. Nevertheless, discrimination not only hampers the individuality, but it also provides a space for a hostile environment for the whole of humanity.

It is my humble request to the whole humanity not to choose to divide yourself. It is also healthier not to provide any space for this label. So, it is required for the whole of humanity to rethink our self to stay with peace and harmony. For this, I will be highly obliged to you.

Your's Truly
Human.

---Md Atif Alam, Ph.D. Scholar, Center for Studies in Economics and Planning, School of Social Sciences, Central University of Gujarat, Gandhinagar, Gujarat, India.

Note:- This letter is written in the period of COVID-19, because a section of the population not only blamed for the spread of COVID-19 but also denied their basic rights i.e. access to health facilities on the ground of their label assigned after their birth. However, this letter is a medium to convey the message to the whole world that humanity must not be compromised at any cost and basic rights should not be refused because of so-called labelling done by the society. So, the structure of the letter is to indicate that a human is addressing another human not to label.

Acknowledgement: I heartily thank to **Dr. Morve Roshan K.** (China and United Kingdom for giving me this opportunity to publish my letter).

END

CAPE COMORIN PUBLISHER
Kanyakumari, Tamilnadu, India
www.capecomorinpublisher.com

ISBN 978-93-88761-62-8
9 789388 761628